ईश्वर और इंसान

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

ईश्वर और इंसान

लेखक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

अनुवादक

मोहम्मद ख़ादिम

संपादक

मोहम्मद आरिफ़

विषय-सूची

भूमिका

इंसान ने सदैव ईश्वर को समझने में भी ग़लती की है और स्वयं को समझने में भी। इसने ईश्वर को अपने जैसा समझ लिया और स्वयं को ईश्वर जैसा। यही हर दौर के इंसान की ग़लती रही है। सारा इंसानी इतिहास ऐसी ही ग़लतियों और इसके परिणामों की कहानी है। ईश्वर को अपने जैसा समझना वैसा ही है, जैसे कि ईश्वर को मानवीय स्तर पर उतार लाया जाए। नास्तिकता और बहुदेववाद के समस्त प्रकार इसी ग़लती की पैदावार हैं। नास्तिकता भी ईश्वर को इंसान जैसा समझने का दूसरा नाम है और बहुदेववाद भी।

इंसान सदैव माता-पिता के द्वारा पैदा होता है, वह किसी पैदा करने वाले के द्वारा पैदा किया जाता है। इस आधार पर भ्रम हो गया कि ईश्वर अगर है तो उसे पैदा करने वाला भी कोई होना चाहिए। किसी को ईश्वर से पहले होना चाहिए, जो ईश्वर को अस्तित्व प्रदान करे। अब चूँकि इंसान को ईश्वर को पैदा करने वाला नज़र नहीं आया, इसलिए उसने ईश्वर के अस्तित्व को नकार दिया। इंसान अपनी रचना के रूप में अपने रचयिता को देख रहा था, वह अपनी एक ग़लत परिकल्पना के कारण ईश्वर को मानने को तैयार न हुआ। जिन लोगों ने ईश्वर को माना, उन्होंने यही ग़लती दूसरी शैली में की। उन्होंने देखा कि इंसान जब किसी कार्य की पूर्ति करता है तो बहुत से लोगों की सहायता से उसकी पूर्ति करता है। इसके संदर्भ में उन्होंने ईश्वर के साझी और सहायक मान लिये।

इंसान के यहाँ बड़े लोगों की सिफ़ारिशें चलती हैं। अत: मान लिया गया कि ईश्वर के भी कुछ विशेष और निकटतम लोग हैं, जो ईश्वर के दरबार में अपना प्रभाव रखते हैं। इंसान अधिकतर सत्य के मार्ग को छोड़कर भावनात्मक अभिरुचि के अंतर्गत निर्णय करता है। इस प्रकार कल्पना करते

हुए यह विश्वास बना लिया गया कि ईश्वर केवल सामूहिक संबंधों के आधार पर कुछ लोगों से ऐसा व्यवहार करता है, जो व्यवहार वह दूसरे समूह से संबंध रखने वालों के साथ नहीं करता। इस प्रकार की हर आस्था ईश्वर के ईश्वरत्व का इनकार है, लेकिन इंसान अपनी नादानी से अक्सर अपने मन-मस्तिष्क में विरोधाभासी विचारों का संग्रह कर लेता है, जिनका एक ही समय सही होना संभव नहीं।

स्वयं को ईश्वर जैसा समझने का तात्पर्य यह है कि इंसान यह समझता है कि वह अपने भाग्य का स्वामी स्वयं है। वह आज़ाद है, जो चाहे करे और जो चाहे न करे। वह अपने जीवन का नियम अपने आप बनाए और क्या चीज़ वैध है और क्या अवैध, इसे स्वयं अपनी बुद्धि से निर्धारित करे। इस प्रकार का हर प्रयास मानो स्वयं को ईश्वर के स्थान पर बैठाना है, जिस चीज़ पर केवल ईश्वर का अधिकार है, उसका अधिकारी स्वयं को समझना है, लेकिन ऐसी ही कल्पना इस ब्रह्मांड में पूर्णत: असत्य है, क्योंकि इंसान केवल एक असहाय रचना (Helpless Creation) है, वह किसी भी दृष्टि से रचयिता का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान
(14 मार्च, 1982)

ईश्वर और इंसान

संसार में जीवन की गतिविधियाँ इस बात की खुली हुई घोषणा है कि इस संसार का रचयिता एक जीवित अस्तित्व है।

ब्रह्मांड ईश्वर का दर्पण है। यहाँ ईश्वर अपनी रचनाओं के रूप में उपस्थित है। इंसान की हैसियत अगर ज़िंदा हो तो अपने चारों ओर वह ईश्वर को ही पाएगा। अपने चारों ओर वह ईश्वर का ही अवलोकन करेगा। ईश्वर का ब्रह्मांड उसके लिए ईश्वर का जीवित प्रमाण बन जाएगा।

संसार में जीवन की गतिविधियाँ इस बात की खुली हुई घोषणा है कि इस संसार का रचयिता एक जीवित अस्तित्व है, न कि कोई ऐसा अस्तित्व जो जीवन से वंचित हो। जब सूरज निकलता है और छिपी हुई चीज़ें इसके प्रकाश में दिखाई देने लगती हैं तो ऐसा लगता है मानो ईश्वर ने अपनी आँखें खोली हों, जैसे ईश्वर एक देखने वाला अस्तित्व हो और अपनी आँखों से सारे संसार को देख रहा हो। नदियों में जब पानी का सैलाब उठता है तो वह ऊँची आवाज़ में घोषणा करता है कि इस संसार का रचयिता एकमात्र ऐसा रचयिता है, जो चलता है और संकल्प करके आगे बढ़ता है।

जंगल का शेर अपना पंजा निकालकर किसी जानवर को अपनी पकड़ में लेता है तो मानो वह कह रहा होता है कि इसे पैदा करने वाला ऐसा ईश्वर है, जो पकड़ने की शक्ति रखता है और वह चीज़ों को अपनी पकड़ में लेता है। अंतरिक्ष का अंतहीन विस्तार इस वास्तविकता का आदि प्रकटन (Disclosure) है कि इस ब्रह्मांड के रचयिता का असीमित अस्तित्व है। वह अपने व्यक्तित्व में भी अथाह है और अपने गुणों में भी।

ईश्वर का यह ब्रह्मांडीय अवलोकन (Cosmic Observation) एक ओर आदमी के अंदर ईश्वर का विश्वास पैदा करता है, दूसरी ओर उसे बहुत बड़े प्रश्न से दो-चार कर देता है। इस संसार का अगर ईश्वर है तो वह अपने संसार में प्रकट क्यों नहीं होता? संसार में बहुत सारी बुराइयाँ हैं। यहाँ एक इंसान दूसरे इंसान पर अत्याचार करता है। एक इंसान अवसर पाकर दूसरे इंसान की हत्या कर देता है। यह सब ईश्वर के संसार में प्रतिदिन हो रहा है, लेकिन ईश्वर अत्याचारियों का हाथ नहीं पकड़ता, वह पीड़ितों के साथ खड़ा नहीं होता।

इस प्रश्न को केवल उस समय समझा जा सकता है, जबकि रचनाओं के विषय में रचनाकार की योजना को समझ लिया जाए। वर्तमान संसार ईश्वर की स्थायी व्यवस्था नहीं, वह केवल परीक्षण की व्यवस्था है। यह उस खेत की तरह है, जिसमें अलग-अलग पौधों को उगने का अवसर देकर यह देखा जा रहा है कि कौन अच्छा वृक्ष है और कौन झाड़-झंखाड़। इसके बाद अच्छे वृक्षों को अवसर देकर सभी बेकार वृक्षों को उखाड़ दिया जाएगा और फिर ईश्वर का संसार ईश्वर की स्तरीय व्यवस्था के अंतर्गत सुंदरता और आनंद का स्थायी स्वर्ग बन जाएगा।

यह गूँगे शाहकारों का अजायबघर नहीं

इंसान दूसरी आवाज़ में इतना खोया हुआ है कि उसे ब्रह्मांड का मौन वार्तालाप सुनाई नहीं देता।

समस्त यात्राओं में रेल की यात्रा सबसे अधिक अनुभवों से भरी होती है। इंसानी क़ाफ़िलों को लिये हुए तेज़ रफ़्तार एक्सप्रेस दौड़ी चली जा रही है। गाड़ी के दोनों ओर प्रकृति के दृश्य निरंतर हमारा साथ दे रहे हैं। इस प्रकार ट्रेन जैसे जीवन की बड़ी यात्रा का एक प्रतीक बन गई है, जो निशानियों से भरे हुए इस संसार में इंसान तय कर रहा है, लेकिन जिस प्रकार ट्रेन के यात्री चारों दिशाओं के दृश्यों से अनभिज्ञ होकर अपनी निजी दिलचस्पियों में खोए रहते हैं, उसी प्रकार इंसान वर्तमान संसार में अपने जीवन के दिन पूरे कर रहा है। बहुत कम ऐसा होता है कि वह ईश्वर की बिखरी हुई निशानियों पर सोच-विचार करे।

सूरज अपनी रोशनी का उजाला लिये निकलता है और इंसान के ऊपर इस प्रकार चमकता है मानो वह कोई संदेश सुनाना चाहता हो, लेकिन वह कुछ कहने से पहले ही अस्त हो जाता है। वृक्ष अपनी हरी-भरी शाख़ें निकालते हैं, नदी अपनी लहरों के साथ बहती है। ये सब कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन इंसान इनके पास से गुज़र जाता है, इन्हें अनसुना किए हुए। आकाश की ऊँचाइयाँ और धरती की कोमलताएँ सब एक बड़े 'समूह' में सम्मिलित मालूम होते हैं, लेकिन इनमें से हर एक मौन है। वह इंसान से बात नहीं करता। यह महान सृष्टि क्या गूँगे शाहकारों[1] का अजायबघर है? नहीं,

---

1 किसी कलाकार की सर्वोत्तम कला।

वास्तविकता यह है कि इनमें से सबके पास ईश्वर का संदेश है और इस संदेश को हर कोई सार्वकालिक भाषा में प्रसारित कर रहा है, लेकिन इंसान दूसरी आवाज़ में इतना खोया हुआ है कि उसे ब्रह्मांड का मौन वार्तालाप सुनाई नहीं देता।

एक यात्रा के दौरान हम एक स्टेशन पर नमाज़ पढ़ने के लिए उतरे। हमने स्टेशन के आदमियों से पूछा कि पश्चिम किस ओर है, लेकिन किसी के पास इस साधारण से प्रश्न का उत्तर न था। मैंने सोचा कि सूरज एक प्रकाशमय वास्तविकता की हैसियत से प्रतिदिन इनके ऊपर निकलता है और अस्त होता है, लेकिन लोग स्वयं में इतने व्यस्त हैं कि इनको पश्चिम व पूरब का ज्ञान ही नहीं। फिर वह सौम्य संदेश, जो सूरज और इसके ब्रह्मांडीय सहयोगी मौन भाषा में प्रसारित कर रहे हैं, इनसे कोई कैसे सचेत हो सकता है!

हमारी ट्रेन एक स्टेशन पर रुकी। मैं बाहर आकर प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया। सूरज अभी-अभी अस्त हुआ था। हरे-भरे वृक्ष, इनके पीछे बिखरती लालिमा और इनके ऊपर फैले हुए बादल विचित्र क्षितिजीय सुंदरता का दृश्य प्रस्तुत रहे थे। इनमें यह सुंदरता इनकी ऊँचाई ने पैदा की है। मैंने सोचा— 'लेकिन इंसान इन ऊँचाइयों तक जाने के लिए तैयार नहीं होता। वह उस स्तर पर नहीं जीता, जिस स्तर पर वृक्ष जी रहे हैं। वह वहाँ बसेरा नहीं लेता, जहाँ रोशनी और बादल बसेरा लिये हुए हैं। इसके विपरीत वह निम्नस्तरीय स्वार्थों में ही जीता है। वह झूठी शत्रुता में साँस लेता है, सृष्टि का सहचर बनने के बजाय अपने आपको वह अपने अस्तित्व के आवरण में बंद कर लेता है। एक ऐसा संसार, जहाँ स्वर्ग की बहारें उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं। वहाँ वह अपने आपको नरक के वातावरण में डाल देता है। इस संसार के बिगाड़ का सारा कारण यही है। अगर वह उच्चस्तर पर जीने लगे तो उसके जीवन में भी वही सुंदरता आ जाए, जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों में दिखाई देती है।'

ईश्वर का संसार

ईश्वर मौन भाषा में बोल रहा है और हम इसको शोर की भाषा में सुनना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में भला कैसे संभव है कि हम ईश्वर की आवाज़ को सुन सकें?

जब आप अपने कमरे में हों तो आप इसकी छत को मापकर पता कर सकते हैं कि इसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी है, लेकिन जब आप खुले मैदान में आसमान के नीचे होते हैं तो आपको यह पता होता है कि आसमान की छत की लंबाई और चौड़ाई को मापने के लिए आपके सारे पैमाने अपर्याप्त (Insufficient) हैं। यही स्थिति ईश्वर के पूरे संसार की है। एक बीज जिस प्रकार बढ़कर वृक्ष का एक संसार बनाता है, इसका वर्णन कौन कर सकता है? सूर्य का प्रकाश, हवाओं की व्यवस्था, चिड़ियों के गीत, पानी के बहते हुए स्रोत और इसी प्रकार की असंख्य चीज़ें, जिनको हम अपनी आँखों से देखते हैं, उनका शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं। सत्य इसमें अधिक सौम्य है कि इसका इंसानी शब्दों में वर्णन किया जा सके। वास्तविकता यह है कि जहाँ ज़ुबान मौन हो जाती है, वहाँ से वास्तविकताएँ आरंभ होती हैं। जहाँ शब्द साथ नहीं देते, वहाँ से अर्थ का प्रारंभ होता है।

ईश्वर मौन भाषा में बोल रहा है और हम इसको शोर की भाषा में सुनना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में भला कैसे संभव है कि हम ईश्वर की आवाज़ को सुन सकें? इस संसार की सबसे मूल्यवान बातें वह हैं, जो मौन भाषा में प्रसारित हो रही हैं; लेकिन जो लोग शोरगुल की भाषा सुनना जानते हों, वे इन मूल्यवान बातों से उसी प्रकार अनजान रहते हैं, जिस प्रकार एक बहरा आदमी संगीत से।

ईश्वर का संसार तो बहुत सुंदर है, इसकी सुंदरता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। आदमी जब इस संसार को देखता है तो एकदम से उसका

जी चाहता है कि वह ईश्वर के इस अनंत संसार का वासी बन जाए। वह हवाओं में शामिल हो जाए, वह पेड़-पौधों की हरियाली में जा बसे, वह आसमान की ऊँचाइयों में खो जाए, लेकिन इंसान की सीमाएँ उसकी इस अभिलाषा के पथ में बाधा हैं। वह अपने प्रिय संसार को देखता है, लेकिन उसमें शामिल नहीं हो पाता। शायद स्वर्ग इसी का नाम है कि इंसान को उसकी सीमाओं से स्वतंत्र कर दिया जाए, ताकि वह ईश्वर के सुंदर संसार में सदैव के लिए प्रविष्ट हो जाए।

इंसान ने जो सांस्कृतिक संसार बनाया है, वह ईश्वर के संसार से बिल्कुल अलग है। इंसान की बनाई हुई सवारियाँ शोर और धुआँ पैदा करती हैं, लेकिन ईश्वर के संसार में प्रकाश एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति सेकंड की रफ़्तार से चलता है और न कहीं शोर होता है, न ही धुआँ। इंसान इंसानों के बीच इस प्रकार रहता है कि एक को दूसरे से विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है, लेकिन ईश्वर के संसार में हवा इस प्रकार गुज़रती है कि वह किसी से नहीं टकराती। इंसान अपनी गंदगी को कार्बन, पसीने और मल-मूत्र के रूप में बाहर निकालता है, लेकिन ईश्वर ने अपने संसार में जो वृक्ष उगाए हैं, वह इसके विपरीत अपनी मलिनता को ऑक्सीजन के रूप में बाहर निकालते हैं और फूल अपनी मलिनता को सुगंध के रूप में।

इंसान के बनाए हुए समस्त नगरों में कूड़े को ठिकाने लगाना एक बहुत बड़ी समस्या बना हुआ है, जबकि ईश्वर के बनाए हुए संसार में हर रोज़ बड़े पैमाने पर कूड़ा निकलता है, लेकिन किसी को पता नहीं चलता, क्योंकि उसका पुनर्चक्रण (Recycling) करके उसे दोबारा सृष्टि के लाभदायक अंशों में परिवर्तित कर दिया जाता है। जो इंसान वास्तविकता की झलक देख ले, वह इसके वर्णन से स्वयं को असहाय अनुभव करने लगता है। वह मौन हो जाता है, न यह कि वह शब्दों का भंडार खड़ा कर दे।

उपास्य की माँग

इंसान रचयिता को नहीं देखता, इसलिए वह रचना को अपना इलाह बना लेता है। मोमिन वह है, जो प्रत्यक्ष से गुज़रकर भीतर तक पहुँच जाए।

रूस के अंतरिक्ष यात्री आंद्रेन निकोलाइफ़ अगस्त, 1962 में जब एक अंतरिक्ष उड़ान से वापस आए तो 21 अगस्त की मास्को की एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा—

"जब मैं धरती पर उतरा तो मेरा जी चाहता था कि मैं धरती को चूम लूँ।"

इंसान जैसी एक रचना के लिए धरती पर जो अनगिनत अनुकूल सामान जमा है, वह ज्ञात ब्रह्मांड में कहीं भी नहीं। रूसी अंतरिक्ष यात्री धरती से दूर अंतरिक्ष में गया तो उसने पाया कि विशाल अंतरिक्ष में इंसान के लिए केवल आश्चर्य करने और भटकने के अलावा और कुछ नहीं है। वहाँ इंसान को न तो शांति मिल सकती है और न ही वहाँ उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने का कोई सामान है। इस अनुभव के बाद जब वह धरती पर उतरा तो उसे धरती के मूल्य का बोध हुआ। ठीक वैसे ही, जैसे किसी प्यासे आदमी को पानी की महत्ता का बोध होता है। धरती अपनी समस्त अनुकूल संभावनाओं के साथ उसे इतनी प्रिय लगी कि उसका जी चाहा कि वह उससे लिपट जाए और अपनी भावनाओं व प्रेम को उस पर न्योछावर कर दे।

यही वह चीज़ है कि जिसे इस्लाम में 'इलाह[2] बनाना कहा गया है। इंसान रचयिता को नहीं देखता, इसलिए वह रचना को अपना इलाह बना

[2] पूज्य , उपास्य।

लेता है। मोमिन[3] वह है, जो प्रत्यक्ष से गुज़रकर भीतर तक पहुँच जाए और जो इस वास्तविकता को जान ले कि यह जो कुछ दिखाई दे रहा है, यह किसी का दिया हुआ है। धरती पर जो कुछ है, वह सब श्रेष्ठ हस्ती का पैदा किया हुआ है। वह रचना को देखकर रचयिता को प्राप्त कर ले और रचयिता को अपना सब कुछ बना ले। यही नहीं, वह अपनी समस्त श्रेष्ठ भावनाओं को ईश्वर के लिए न्योछावर कर दे।

रूसी अंतरिक्ष यात्री पर जो अवस्था धरती को पाकर गुज़री, वह अवस्था अधिक वृद्धि के साथ इंसान पर ईश्वर को पाकर गुज़रनी चाहिए। मोमिन वह है, जो सूरज को देखे तो उसके प्रकाश से ईश्वर के प्रकाश को पा ले। वह आकाश की विशालताओं में ईश्वर की असीमितता का अवलोकन करने लगे। वह फूल की ख़ुशबू में ईश्वर की महक को पाए और पानी के बहने में ईश्वर के वरदान को देखे। मोमिन और ग़ैर-मोमिन में अंतर यह है कि ग़ैर-मोमिन की दृष्टि रचनाओं में अटककर रह जाती है और मोमिन रचनाओं से गुज़रकर रचनाकार तक पहुँच जाता है। ग़ैर-मोमिन रचनाओं की सुंदरता को स्वयं रचनाओं ही की सुंदरता समझकर इन्हीं में खो जाता है। मोमिन रचनाओं की सुंदरता में रचनाकार की सुंदरता देखता है और स्वयं को रचयिता के आगे डाल देता है। ग़ैर-मोमिन का सज्दा[4] चीज़ों के लिए होता है और मोमिन का सज्दा चीज़ों के रचयिता के लिए।

---

[3] धर्मनिष्ठ मुसलमान, ईश्वर और इस्लाम पर दृढ़ विश्वास रखने वाला, ईश्वरभक्त।

[4] सम्मान और समर्पण के भाव से माथा टेकना।

इंसान की खोज

‘नज़र आने वाले’ संसार में इंसान की खोज का उत्तर उपस्थित नहीं है। इसका उत्तर उस ‘नज़र न आने वाले’ संसार में है, जिसको इंसान महसूस तो करता है, लेकिन देख नहीं पाता।

इंसान के अंदर एक विचित्र विशेषता है, जो किसी दूसरे प्राणी में नहीं हैं। वह है अंतहीन खोज की भावना। हर इंसान पैदाइशी भावना के अंतर्गत एक ऐसी लापता चीज़ की खोज में रहता है, जिसे उसने पाया ही नहीं। कोई भी सफलता उसको इस माँग के बारे में संतुष्ट नहीं करती, कोई भी असफलता उसके अंदर से इस भावना को मिटा नहीं पाती। दार्शनिक इसे आदर्श की माँग कहते हैं। यह आदर्श की माँग ही समस्त गतिविधियों की वास्तविकता और अंतिम शक्ति की प्रेरक है। अगर यह माँग न हो तो संसार की सारी गतिविधियाँ अचानक ठप्प होकर रह जाएँ।

इंसानी ज़हन (Mind) की यही वह ज़बरदस्त माँग है, जिसका फ्राइड ने ग़लत रूप से यौन-इच्छा से स्पष्टीकरण किया। एडलर ने इसे ग़लत रूप से शक्ति-प्राप्ति की रक्षा कहा। मैक डूगल ने ग़लत रूप से कहा कि यह इंसान की समस्त जैविक प्रवृत्ति के मिश्रण का रहस्यमय परिणाम है। मार्क्स ने इसे ग़लत रूप से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि यह मानवीय जीवन की आर्थिक इच्छा है और यही इसकी समस्त तत्परता को नियंत्रित करती है, लेकिन इन व्याख्याओं को ग़लत सिद्ध करने के लिए यही पर्याप्त है कि वह

चीज़ें जिन लोगों को मिलीं, वे भी संतुष्ट न हो सके। उन्हें आंतरिक अस्तित्व भी इसी प्रकार व्याकुल कर रहा है, जिस प्रकार इन चीज़ों से वंचित रहने वाले असंतुष्ट नज़र आते हैं।

इंसान हज़ारों वर्ष से अपने इस आइडियल को सांसारिक चीज़ों में खोज रहा है, लेकिन कोई भी इंसान इस संतुष्टि से दो-चार नहीं हुआ कि उसने अपनी खोज का पूरा उत्तर पा लिया है। इस मामले में बादशाह या धनवान भी इतना ही असंतुष्ट रहता है, जितना कोई निर्बल और निर्धन आदमी। यह लंबा अनुभव यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि 'नज़र आने वाले' संसार में इंसान की खोज का उत्तर उपस्थित नहीं है। इसका उत्तर उस 'नज़र न आने वाले' संसार में है, जिसको इंसान महसूस तो करता है, लेकिन देख नहीं पाता।

वास्तविकता यह है कि यह माँग ईश्वर की माँग है। इंसान जिस आइडियल को पाने के लिए व्याकुल रहता है, वह स्वयं उसका रचयिता है। हर इंसान जिस चीज़ की खोज में हैं, वह वास्तव में वह ईश्वर है, जो उसकी आत्मा में समाया हुआ है। हर इंसान अपने स्वभाव के अंतर्गत निरंतर ईश्वर की खोज में रहता है, वह अपने इन भीतरी उत्तरों के अंतर्गत संसार की विभिन्न चीज़ों की ओर दौड़ता है और समझता है कि शायद यह चीज़ उसकी खोज का उत्तर हो, लेकिन जब वह इसे पा लेता है और निकट से इसका विश्लेषण करता है तो उसको पता चलता है कि यह वह चीज़ नहीं, जिसकी खोज में वह व्याकुल था।

सब कुछ अद्भुत है

सामान्य आदमी केवल किसी अनोखी घटना की विलक्षणता देख पाता है, बुद्धिमान वह है जो साधारण घटनाओं में भी अद्भुतता को देख ले।

1957 में रूस ने पहला अंतरिक्ष-यान स्पूतनिक अंतरिक्ष में भेजा था। अमेरिका ने 12 अप्रैल, 1981 को अंतरिक्ष-यान कोलंबिया दो आदमियों के साथ भेजा। वह इस प्रकार बनाया गया कि लगभग सौ बार अंतरिक्ष-यात्रा के लिए प्रयोग किया जा सके।

कोलंबिया यान का वज़न 75 टन है। इसे बनाने में लगभग दस अरब डॉलर ख़र्च हुए और वह नौ वर्ष में बनकर तैयार हुआ। कोलंबिया अपने दो यात्रियों को लेकर अंतरिक्ष में रवाना हुआ। इसकी गति 26 हज़ार मील प्रति घंटा थी। वह 54 घंटे अंतरिक्ष में रहा। उसने धरती के 36 चक्कर लगाकर 10 लाख मील की दूरी तय की और फिर 14 अप्रैल को वापस आ गया। वापसी के समय विशेष रॉड और रॉकेट के द्वारा उसकी गति को घटाकर 345 किलोमीटर प्रति घंटा किया गया। जब उसने वायुमंडल में प्रवेश किया तो वह हवा की रगड़ से गर्म होकर सुर्ख़ ईंट की तरह हो गया। उस समय उसका बाहरी तापमान 11,500 डिग्री सेंटीग्रेड था, लेकिन कोलंबिया की भीतरी दिशाओं में हर ओर गर्मी रोकने वाले टाइल 31 हज़ार की संख्या में लगाए गए थे। इसी कारण उसके अंदर के दोनों यात्री सुरक्षित रहे।

कोलंबिया को अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया के एक सुनसान हवाई मैदान में उतारा गया। वह केवल 10 सेकंड के अंतर से अपने ठीक समय पर उतर गया। लगभग दो लाख लोग उसके उतरने के दृश्य को देखने के लिए जमा थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों के करोड़ों लोगों ने इस घटना को

टेलीविज़न पर देखा।

कैलिफोर्निया के मरुस्थल में 20 ट्रक और कई हवाई जहाज़ और अन्य सामान उपस्थित थे, ताकि उतरने के बाद वह कोलंबिया की हर आवश्यकता को पूरा कर सकें। कोलंबिया रॉकेट के स्तंभीय रूप में ऊपर गया। वह एक अधीन नक्षत्र की तरह धरती के इर्द-गिर्द घूमा और फिर बिना इंजन के जहाज़ (Glider) की तरह धरती पर उतर गया।

कोलंबिया के दो यात्रियों में से एक मिस्टर यंग थे। उनकी आयु उस समय 50 वर्ष थी। 54 घंटे भारहीन (Weightless) हालत में रहने के बाद जब वे इस आश्चर्यजनक अंतरिक्ष-यात्रा से वापस आकर कैलिफोर्निया पहुँचे तो अचानक उनकी ज़ुबान से निकला—

"What a way to come to California."

मिस्टर यंग अंतरिक्ष-यात्रा पूरी करके कोलंबिया द्वारा कैलिफोर्निया में उतरे तो यह बात उन्हें बहुत अद्भुत प्रतीत हुई, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस ब्रह्मांड की हर चीज़ अद्भुत है। कोई यात्रा चाहे पैदल हो या सवारी के द्वारा, इसमें इतने अनगिनत ब्रह्मांडीय संसाधन सम्मिलित होते हैं कि इंसान उनके बारे में सोचे तो साधारण यात्रा भी उसे आश्चर्यजनक प्रतीत हो और वह पुकार उठे, मेरा अपने पैरों से चलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचना भी इतना ही अद्भुत है, जितना कोलंबिया के द्वारा अंतरिक्ष-यात्रा करके कैलिफोर्निया के सुनसान मैदान में उतरना। सामान्य आदमी केवल किसी अनोखी घटना की विलक्षणता देख पाता है, बुद्धिमान वह है जो साधारण घटनाओं में भी ऐसी अद्भुतता को देख ले।

खोज का आनंद

हमारे चारों ओर जो संसार है, इसको हम बचपन से देखते-देखते आदी हो जाते हैं। इससे हम इतना प्रभावित हो जाते हैं कि इसके अनोखेपन का हमें अहसास नहीं होता।

सूर्य हमारी धरती से बारह लाख गुना बड़ा और इससे साढ़े नौ करोड़ मील दूर है, फिर भी सूर्य का प्रकाश और ताप अत्यधिक मात्रा में हम तक पहुँच रहा है। यह सूर्य ब्रह्मांड का एक छोटा तारा है, जो निकट होने के कारण हमें बड़ा दिखाई देता है। अधिकतर तारे सूर्य से बहुत अधिक बड़े होते हैं और इससे बहुत अधिक प्रकाशित भी। प्रकाश व ताप के यह महान संसार, जिन्हें नक्षत्र कहा जाता है, अनगिनत संख्या में अंतरिक्ष में फैले हुए हैं। खरबों वर्ष से दहकने के पश्चात भी उनका तापीय भंडार समाप्त नहीं होता।

नक्षत्रों में अत्यधिक ऊर्जा कैसे पैदा होती है? हैंस बेथे ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में गहन अध्ययन के बाद बताया कि इसका रहस्य कार्बन साइकल है। इस अध्ययन पर उनको भौतिकी का नोबल पुरस्कार दिया गया।

डॉक्टर बेथे ने जिस दिन कार्बन साइकल की यह वैज्ञानिक खोज की, वह उनके लिए हर्ष और उत्तेजना का वह क्षण था, जिसका वर्णन करना संभव नहीं। उनकी पत्नी रोज़ बेथे कहती थीं कि रात का समय था। हम न्यू मैक्सिको के मरुस्थल में थे। मरुस्थलीय वातावरण में आकाश के तारे विचित्र गरिमा के साथ चमक रहे थे। रोज़ बेथे ने ऊपर निगाह की और आश्चर्यचकित होकर कहा, “आकाश के तारे कितने अधिक चमक रहे हैं!” डॉक्टर बेथे ने जवाब दिया, “क्या तुम्हें पता है कि इस समय तुम उस अकेले इंसान के निकट खड़ी हो, जो यह जानता है कि यह तारे अंततः क्यों चमकते हैं?”

हैंस बेथे की यह खोज मूल वास्तविकता का अत्यंत आंशिक पहलू थी। उन्होंने तारे में कार्बन साइकल की खोज की, लेकिन प्रश्न यह है कि स्वयं कार्बन साइकल की प्रक्रिया नक्षत्रों में क्यों है? इस बहुत बड़े रहस्य को मोमिन ईश्वर के रूप में खोजता है। ईश्वर पर ईमान[5] एक खोज है, जो समस्त खोजों से बड़ी है, लेकिन कैसी विचित्र बात है कि वैज्ञानिक जब कोई साधारण खोज करता है तो वह बहुत अधिक भावुक हो जाता है, लेकिन जब ईमान वाले सबसे बड़ी चीज़ ईश्वर को खोजते हैं तो उनके अंदर कोई भावनात्मक उबाल पैदा नहीं होता। शायद ईश्वर पर ईमान के दावेदारों ने अभी ईश्वर को प्राप्त नहीं किया है।

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव

वर्तमान संसार में इंसान की सबसे बड़ी प्राप्ति यह है कि वह ईश्वर को देखने लगे। अपने पास ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करने लगे।

अपोलो-15 में अमेरिका के जो तीन अंतरिक्ष-यात्री चाँद पर गए थे, उनमें से एक कर्नल जेम्स इरविन थे। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा कि अगस्त, 1972 का वह क्षण मेरे लिए अद्भुत था, जब मैंने चाँद की सतह पर क़दम रखा। मैंने वहाँ ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया। उन्होंने कहा कि मेरी आत्मा पर उस समय उन्मादी अवस्था छाई हुई थी और मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे ईश्वर बहुत निकट हो। ईश्वर की महानता मुझे अपनी आँखों से दिखाई दे रही थी। चाँद की यात्रा मेरे लिए एक विज्ञानी यात्रा नहीं थी, बल्कि

[5] ईश्वर और इस्लाम पर दृढ़ विश्वास।

इससे मुझे आध्यात्मिक जीवन मिला।

(ट्रिब्यून, 27 अक्टूबर, 1972)

कर्नल जेम्स इरविन का यह अनुभव कोई अनोखा अनुभव नहीं। वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने जो कुछ पैदा किया है, वह इतना आश्चर्यजनक है कि उसे देखकर इंसान रचयिता की कारीगरी में डूब जाए। रचना के चमत्कार में हर क्षण रचयिता का चेहरा झलक रहा है, लेकिन हमारे चारों ओर जो संसार है, इसको हम बचपन से देखते-देखते आदी हो जाते हैं। इससे हम इतना प्रभावित हो जाते हैं कि इसके अनोखेपन का हमें अहसास नहीं होता। हवा, पानी, पेड़ और चिड़िया, अभिप्राय यह है कि जो कुछ भी हमारे संसार में है, सब कुछ विचित्र है। हर चीज़ अपने रचनाकार का दर्पण है, लेकिन आदी होने के कारण हम उसकी विलक्षणता को अनुभव नहीं कर पाते।

एक आदमी जब अचानक चाँद पर उतरा और पहली बार वहाँ की रचनात्मक सृष्टि को देखा तो वह उसके रचनाकार को महसूस किए बिना न रह सका। उसने उत्पत्ति के कारनामे में उसके उत्पत्तिकर्ता को उपस्थित पाया। हमारा वर्तमान संसार जिसमें हम रहते हैं, यहाँ भी ईश्वर की उपस्थिती का अनुभव इसी प्रकार हो सकता है, जिस प्रकार चाँद पर पहुँचकर कर्नल इरविन को हुआ, लेकिन लोग वर्तमान संसार को इस आश्चर्य प्रकट करने वाली दृष्टि से नहीं देख पाते। जिस प्रकार चाँद का नया यात्री चाँद को देखता है, अगर हम अपने संसार को इस दृष्टि से देखने लगे तो हमें अपने पास ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव होगा। हम इस प्रकार रहने लगेंगे, जैसे हम ईश्वर के पड़ोस में रह रहे हैं और हर समय वह हमारी दृष्टि के सामने है।

अगर हम किसी उच्च श्रेणी की मशीन को पहली बार देखें तो तुरंत हम इसके कुशल इंजीनियर की उपस्थिति को वहाँ अनुभव करने लगते हैं। इसी प्रकार अगर हम संसार को और इसकी चीज़ों को गहराई के साथ देख सकें तो उसी समय हम वहाँ ईश्वर की उपस्थिति को पाएँगे। रचयिता हमें

इस प्रकार नज़र आएगा कि हम रचयिता और रचना को एक-दूसरे से अलग न कर सकें।

वर्तमान संसार में इंसान की सबसे बड़ी प्राप्ति यह है कि वह ईश्वर को देखने लगे। अपने पास ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करे। अगर इंसान का अहसास ज़िंदा हो तो सूरज की सुनहरी किरणों में उसको ईश्वर का प्रकाश जगमगाता हुआ दिखाई देगा। हरे-भरे पेड़ों के सुंदर दृश्यों में वह ईश्वर का रूप झलकता हुआ पाएगा। हवाओं के कोमल झोंकों में उसे ईश्वर को छूने का अनुभव होगा। अपनी हथेली और अपने माथे को धरती पर रखते हुए उसे ऐसा अनुभव होगा, जैसे उसने अपना अस्तित्व अपने रचयिता के क़दमों में डाल दिया है। ईश्वर हर जगह उपस्थित है, बस देखने वाली दृष्टि इंसान को प्राप्त हो जाए।

कायनात का दस्तरख़्वान

ईश्वर में दृढ़ विश्वास अगर किसी इंसान को वह संवेदनाएँ दे दे, जो ईश्वर पर सच्चे विश्वास से पैदा होती हैं तो सृष्टि की घटनाओं में उसे चारों ओर ईश्वर का प्रकाश दिखाई देगा।

क़ुरआन में कहा गया है— "अल्लाह आसमान व ज़मीन का नूर है।" (सूरह अन-नूर) इसका अर्थ यह है कि संपूर्ण संसार ईश्वरीय गुणों का प्रकटन है। संवेदनशील हृदय को यहाँ की हर चीज़ में ईश्वर की झलकियाँ नज़र आती हैं। ब्रह्मांड अपने पूरे अस्तित्व के साथ आध्यात्मिक आहार का

दस्तरख़्वान[6] है।

ईश्वर में दृढ़ विश्वास अगर किसी इंसान को वह संवेदनाएँ दे दे, जो ईश्वर पर सच्चे विश्वास से पैदा होती हैं तो सृष्टि की घटनाओं में उसे चारों ओर ईश्वर का प्रकाश दिखाई देगा। हवा के कोमल झोंके जब उसके शरीर को छुएँगे तो उसे यह अहसास होगा कि जैसे ईश्वर उसको छू रहा है। नदियों के बहाव में उसे सत्य की करुणा का जोश उबलता हुआ नज़र आएगा। चिड़ियों की चहचाहट जब उसके कानों में रस घोलेगी तो उसके हृदय के तारों पर ईश्वरीय तराने के गीत जाग उठेंगे। फूलों की महक जब उसके मस्तिष्क और प्राणों को सुगंधित करेगी तो वह उसके लिए ईश्वरीय सुगंध में स्नान करने के अर्थ जैसा बन जाएगा।

सारी सृष्टि मोमिन के लिए आत्मिक भोजन का दस्तरख़्वान है। ठीक वैसे ही, जैसे स्वर्ग उसके लिए भौतिक जीवन का दस्तरख़्वान होगा। वर्तमान संसार की सभी चीज़ों को इस प्रकार बनाया गया है कि इंसान उनको देखकर सीख प्राप्त करे। उनके द्वारा वह ईश्वरीय अवस्थाओं को पा ले, जो उनके अंदर उन लोगों के लिए रख दी गई हैं कि जो ईश्वर से डरने वाले हों।

ढाक एक साधारण वृक्ष है, लेकिन इसके ऊपर बहुत सुंदर फूल उगते हैं। शरदकाल के पतझड़ के बाद यह वृक्ष देखने में एक सूखी लकड़ी की तरह इससे भी अधिक सूखी धरती पर खड़ा होता है। इसके बाद एक मौन क्रांति आती है। आश्चर्यजनक रूप से अत्यंत सुंदर फूल उसकी शाख़ों पर खिल उठते हैं। सूखी लकड़ी का आकार कोमल और रंगीन फूलों से ढक जाता है। ऐसा लगता है, जैसे निराश और मूल्यहीन अस्तित्व के लिए ईश्वर ने विशेष रूप से अपनी सुंदर छतरी भेज दी है।

ऐसा इसलिए होता है कि कोई ईश्वर का भक्त उसे देखकर कहे— ऐ ईश्वर! मैं भी एक ढाक हूँ। तू चाहे तो मेरे ऊपर सुंदर फूल खिला दे। मैं एक

---

[6] वह साफ़ कपड़ा, जिस पर खाना परोसा जाता है।

ठूँठ हूँ, तू चाहे तो मुझको हरा-भरा व तरो-ताज़ा कर दे। मैं एक अर्थहीन अस्तित्व हूँ, तू चाहे तो मेरे जीवन को अर्थपूर्णता प्रदान कर दे। मैं नरक के किनारे खड़ा हूँ, तू चाहे तो मुझे स्वर्ग में प्रविष्ट कर दे।

सच्चाई को पाने वाला

ईश्वरीय मार्गदर्शन हर इंसान की प्रकृति की आवाज़ है, लेकिन यह उसी को मिलता है, जो अपने अंदर उसकी सच्ची इच्छा रखता हो।

अर्थों का संसार ईश्वर के दर्शनों का संसार है। कौन है, जो ईश्वर के दर्शनों का इंसानी भाषा में वर्णन कर सके? वास्तविकता यह है कि जहाँ शब्द समाप्त हो जाते हैं, वहाँ से अर्थों का आरंभ होता है। जब हम किसी अर्थ का वर्णन करते हैं तो हम उसका वर्णन नहीं करते, बल्कि उसे कुछ घटा देते हैं, उस पर एक प्रकार का शाब्दिक पर्दा डाल देते हैं।

किसी अर्थपूर्ण वास्तविकता को कोई आदमी केवल उसके शब्दों से नहीं समझ सकता। एक अंधा आदमी किसी के बताने से यह नहीं जान सकता कि फूल क्या है, चाहे उसने फूल की पहचान के लिए इंसानी भाषा के सभी शब्द एकत्र कर दिए हों। इसी प्रकार एक आदमी जिसने मौलिक वास्तविकता को देखने की योग्यता अपने अंदर नहीं जगाई हो, वह मौलिक वास्तविकता से अवगत नहीं हो सकता, चाहे शब्दकोश के सारे शब्द उसके सामने दोहरा दिए जाएँ, चाहे अर्थों के शब्दकोश की सारी जिल्दों को उसे पढ़ा दिया जाए।

ईश्वरीय मार्गदर्शन हर इंसान की प्रकृति की आवाज़ है, लेकिन यह उसी को मिलता है, जो अपने अंदर उसकी सच्ची इच्छा रखता हो, सच्चाई

जिसकी आवश्यकता बन गई हो। जो सच्चाई को पाने के लिए इतना व्याकुल हो कि वह उसी की याद लेकर सोता हो और उसी की याद लेकर जागता हो। जो इंसान इस प्रकार सच्चाई का इच्छुक बन जाए, वही सच्चाई को पाता है।

ऐसा आदमी जैसे ईश्वरीय मार्गदर्शन का आधा रास्ता तय कर चुका है। वह अपने अंदर छुपे हुए 'अह्दे-अलस्त[7] की ईश्वरीय आवाज़ को सुन रहा है। वह अपने अंदर प्राकृतिक गुण को जाग्रत कर चुका है, जो अर्थों की भाषा को समझता हो। ऐसा आदमी अवास्तविक संसार से अरुचि के कारण वास्तविक संसार के इतने निकट आ जाता है कि वह फ़रिश्तों (Angels) की कानाफूसी को सुनने लगता है।

पैग़ंबर[8] इस सत्य की खोज की राह में इंसान का मददगार है। पैग़ंबर के द्वारा सत्य का ज्ञान मिलने से पहले सारे अनुभव अंदर-ही-अंदर अस्पष्ट और अज्ञात शैली में होते हैं। इसके बाद जब पैग़ंबर की आवाज़ उसके अंदर प्रवेश करती है तो वह इस प्रकृति की पुस्तक की व्याख्या बन जाती है। वह अपने अंदर छुपे हुए उच्चारित संकेतों को उच्चारित भाषा में पा लेता है— क़ुरआन और क़ुरआन को पढ़ने वाला, दोनों एक-दूसरे की प्रतिकृति बन जाते हैं। क़ुरआन उसको जानता है और वह क़ुरआन को।

---

[7] वचन : समय की शुरुआत में ईश्वर ने सभी आत्माओं को निर्मित किया और एकत्र करके पूछा था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? तब सभी आत्माओं ने गवाही दी थी कि बेशक, तू ही हमारा रब है।

[8] ईशदूत; ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति, जिसने ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

कृतज्ञता का महत्व

इंसान का स्वभाव यह है कि जो कुछ उसे मिला हुआ है, उस पर वह संतुष्ट नहीं होता और जो कुछ नहीं मिला है, उसके पीछे दौड़ता है।

चार्ल्स रिक्टर एक अमेरिकी विज्ञानी थे। उनकी गिनती भूकंप के कुशल विशेषज्ञों में की जाती है। उन्होंने एक विशेष यंत्र का आविष्कार किया था, जो आज संसार भर में भूकंप की उत्पन्न की हुई शक्ति को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसे रिक्टर स्केल कहते हैं।

चार्ल्स रिक्टर ने कैलिफोर्निया के इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी में आधी शताब्दी तक भूकंप का अध्ययन किया था। उन्होंने कहा था— उनसे अक्सर पूछा जाता है कि भूकंप के ख़तरे से बचने के लिए इंसान को कहाँ भागना चाहिए? कैलिफोर्निया में इसका उत्तर बिल्कुल साधारण है— वह यह कि कहीं नहीं। अमेरिका के 48 राज्यों में भूकंप का सबसे कम ख़तरा फ्लोरिडा और तटीय टेक्सॉस में है, लेकिन मैं फिर प्रश्न करूँगा कि तूफ़ान के बारे में उनका क्या विचार है? वास्तविकता यह है कि हर क्षेत्र के अपने कुछ ख़तरे हैं, इसलिए एकमात्र उपाय यह है कि इंसान किसी दूसरे स्थान पर चला जाए और किसी दूसरे ख़तरे को सहन करे।

(हिंदुस्तान टाइम्स, 7 अक्टूबर, 1980)

इंसान का स्वभाव यह है कि जो कुछ उसे मिला हुआ है, उस पर वह संतुष्ट नहीं होता और जो कुछ नहीं मिला है, उसके पीछे दौड़ता है। इसी स्वभाव का यह परिणाम है कि हर इंसान असंतुष्ट जीवन व्यतीत करता है। कोई प्रत्यक्ष सौभाग्य वाला इंसान जिसको लोग ईर्ष्या-योग्य समझते हैं, वह भी अपने अंदर से उतना ही असंतुष्ट होता है, जितना कि वह लोग जो उसको

ईर्ष्या-योग्य समझते हैं। वह भी अपने अंदर से इतना ही असंतुष्ट होता है, जितना कि वह लोग जो उसको ईर्ष्या की दृष्टि से देख रहे होते हैं।

हर इंसान को कोई-न-कोई नेमत[9] मिली हुई है, लेकिन जिसके अंदर कृतज्ञता की मानसिकता नहीं होती, वह अप्राप्त नेमत की ओर केंद्रित रहता है और जो नेमत हर समय उसे प्राप्त है, उसको कम समझता है। ऐसे इंसान के अंदर अपने ईश्वर के लिए कृतज्ञता की भावना नहीं उभरती। वह ठीक उसी चीज़ से वंचित रह जाता है, जिसको उसे सबसे अधिक अपने सीने के अंदर पोषित करना चाहिए।

वर्तमान संसार को ईश्वर ने इस तरह बनाया है कि यहाँ पूरी सुविधा किसी के लिए नहीं है। जब एक टापू पर रहने वाला इंसान वहाँ की समस्याओं से घबराकर दूसरे टापू पर चला जाए तो उसको दूसरे टापू पर पहुँचकर पता चलेगा कि यहाँ भी अनेक समस्याएँ हैं। इसी प्रकार अगर कम आमदनी वाले की समस्याएँ हों तो अधिक आमदनी वाले की भी समस्याएँ हैं। अगर कमज़ोर इंसान की समस्याएँ हैं तो उनकी भी अपनी समस्याएँ हैं, जिनको शक्ति प्राप्त है। परीक्षा के इस संसार में किसी भी इंसान को समस्याओं से छुटकारा नहीं। इंसान को चाहिए कि वह जिन समस्याओं के बीच खड़ा है, उनको सहन करते हुए अपनी यात्रा जारी रखे। उसके ध्यान का केंद्र ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करना हो, न कि समस्याओं से पवित्र जीवन का स्वामी बनना, क्योंकि वह परलोक से पहले संभव नहीं।

---

9 उपकार, ईश्वर का दिया हुआ धन, कृपा आदि।

प्रत्यक्ष छल-कपट

हालात का थोड़ा-सा अंतर भी इंसान को यह बताने के लिए पर्याप्त हो जाता है कि उसकी कोई वास्तविकता नहीं थी।

एयर मार्शल इद्रीस हसन लतीफ़ को हवाई जहाज़ चलाने का चालीस वर्षीय अनुभव था। 25 अगस्त, 1981 को उन्होंने रूसी संरचना का ध्वनि से तेज़ चलने वाला लड़ाकू जहाज़ मिग-25 परीक्षण के रूप में उड़ाया। आधे घंटे तक उड़ने के बाद उन्होंने जहाज़ को नीचे उतारा। एयर मार्शल जब हवाई जहाज़ से बाहर आए तो उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—

"The flight made even the Himalayas look small."

"हमारी उड़ान के सामने हिमालय पहाड़ भी छोटा दिखाई देता था।"

(टाइम्स ऑफ इंडिया, 1981)

आवाज़ से तेज़ रफ़्तार वाला जहाज़ जब हिमालय के ऊपर से उड़ान भर रहा हो तो उस समय जहाज़ में बैठे हुए इंसान को हिमालय वास्तव में छोटा दिखाई देता है और उस समय उसे अपनी महानता का एक विचित्र अनुभव होता है, लेकिन यह भ्रम उस समय समाप्त हो जाता है, जबकि जहाज़ हिमालय की किसी चोटी से टकरा जाए। चट्टान के साधारण टकराव से भी तुरंत जहाज़ में आग लग जाती है। अचानक जहाज़ और उसका यात्री, दोनों इस प्रकार राख का ढेर बन जाते हैं, जैसे कि उनकी कोई वास्तविकता ही नहीं थी।

वर्तमान संसार में अगर किसी को कोई शाबाशी मिलती है तो वह बहुत जल्दी भ्रम में पड़ जाता है। हालाँकि संसार की हर शाबाशी ऐसे ही है, जैसे तेज़ रफ़्तार हवाई जहाज़ से किसी इंसान का पहाड़ को देखना। यह

स्पष्ट है कि ऐसे यात्री को अपनी सवारी महान प्रतीत होती है, लेकिन यह एक काल्पनिक धोखे के सिवा और कुछ नहीं है। हालात का थोड़ा-सा अंतर भी उसे यह बताने के लिए पर्याप्त हो जाता है कि उसकी कोई वास्तविकता नहीं थी।

संसार में किसी चीज़ को पाने के लिए जिन असंख्य संसाधनों की अनुकूलता आवश्यक है, उन्हें प्रदान करना किसी इंसान के वश की बात नहीं है। यह केवल ईश्वर है, जो समस्त अनुकूल संसाधनों को एकत्र करके किसी घटना को सामने लाता है। फिर भी इस सारे मामले पर प्रत्यक्षत: कारणों का आवरण डाल दिया गया है। इंसान से यह आशा है कि वह उचित शैली को अपनाते हुए ईश्वर के ईश्वरत्व और उसके सामने अपनी दासता को स्वीकार कर ले। यह संभव है कि वह अपने प्रयत्नों से पाए, लेकिन वह उसको ईश्वर की ओर से आया हुआ समझे। वह प्रत्यक्ष रूप में बड़ा बना हुआ हो तो भी अपने आपको छोटा समझे। वह भले ही प्रत्यक्ष रूप से ऊँचाई पर उड़ रहा हो, लेकिन अपने आपको नीचे उतरा हुआ अनुभव करे।

इंसान की परीक्षा यह है कि वह प्रत्यक्षत: फ़रेब से गुज़रकर वास्तविकता को पा ले। यहाँ की हर बड़ाई को झूठी बड़ाई समझे, लेकिन ऐसे बहुत कम लोग हैं, जो इस फ़रेब से पर्दा उठाने में सफल होते हैं।

मार्गदर्शक की आवश्यकता

> पैग़ंबर ने बताया कि इंसान से यह अपेक्षा है कि जिस ईश्वर का आज्ञापालन सारी सृष्टि बल के अधीन कर रही है, उसी ईश्वर का आज्ञापालन इंसान संकल्प के अंतर्गत करने लगे।

हमें भूख लगती है। हम अपनी भूख मिटाने का प्रयास करते हैं। यहाँ तक कि सिद्ध होता है कि यहाँ खाना उपस्थित था, जो हमारी भूख मिटाए। हमें प्यास लगती है। हम अपनी प्यास को बुझाने के लिए प्रयास करते हैं। यहाँ तक कि पता चल जाता है कि यहाँ पानी उपस्थित था, जो हमारी प्यास को बुझाए। ऐसा ही मामला सत्य का है। इंसान सदैव सत्य की खोज में है। यह खोज ही इस बात को सिद्ध कर रही है कि यहाँ कोई सत्य है, जिसे इंसान को जानना चाहिए। सत्य खाने और पीने से अधिक बड़ा है। फिर जब हमारी छोटी इच्छा का उत्तर इस संसार में उपस्थित है तो हमारी बड़ी इच्छा का उत्तर यहाँ क्यों नहीं उपस्थित होगा!

सत्य का प्रश्न अपनी वास्तविकता को जानने का प्रश्न है। इंसान अचानक एक दिन पैदा हो जाता है। हालाँकि उसने स्वयं को पैदा नहीं किया है। वह स्वयं को संसार में पाता है, जो इससे अलग स्वयं अपने आप स्थित है। वह पचास वर्ष या सौ वर्ष इस संसार में रहकर मर जाता है। उसे यह पता नहीं कि वह मरकर कहाँ जाता है। जीवन और मृत्यु, इस वास्तविकता को जानने का प्रश्न ही सत्य का प्रश्न है।

एक इंसान जिस प्रकार खाना और पानी को जान लेता है, उसी प्रकार वह सत्य को नहीं जान सकता। सत्य निश्चित रूप से असीमित और अनंत है। सत्य अगर असीमित और फिर स्थायी न हो तो वह सत्य नहीं, लेकिन इंसान

की बुद्धि और उसकी आयु दोनों सीमित हैं। सीमित बुद्धि असीमित सत्य तक नहीं पहुँच सकती, सीमित आयु का इंसान अनंत सत्य की खोज नहीं कर सकता।

इंसान का यही न जानना यह सिद्ध करता है कि सत्य को जानने के लिए उसे पैग़ंबर की आवश्यकता है। पैग़ंबरी क्या है? पैग़ंबरी का अर्थ यह है कि वह सत्य, जहाँ तक इंसान अपने आप नहीं पहुँच सकता था, वह स्वयं इंसान तक पहुँच जाए। जिस सत्य को हम अपने प्रयासों से नहीं जान सकते, वह स्वयं प्रकट होकर अपने बारे में हमें बता दे।

वास्तविकता से लोगों को पहले ही सूचित करने के लिए उसको ईश्वर ने पैग़ंबर के माध्यम से खोला। वर्तमान परीक्षा का समय समाप्त होने के बाद उसे सीधे तौर पर हर इंसान पर प्रकट कर दिया जाएगा। पैग़ंबर ने बताया कि इंसान से यह अपेक्षा है कि जिस ईश्वर का आज्ञापालन सारी सृष्टि बल के अधीन कर रही है, उसी ईश्वर का आज्ञापालन इंसान संकल्प के अंतर्गत करने लगे। वह अपने अधिकार से स्वयं को ईश्वर के आगे अधिकारहीन बना ले। ईश्वर की दी हुई स्वतंत्रता के पश्चात भी जो लोग ईश्वर के अधीन बन जाएँ, उनके लिए स्वर्ग है और जो लोग स्वतंत्रता पाकर विद्रोही बन जाएँ, उनके लिए नरक।

अंधकार समाप्त होगा

रचयिता की योजना में संसार परीक्षा-गृह है, लेकिन हम इसको प्रत्युपकार-गृह के रूप में देखना चाहते हैं। जो कुछ कल के दिन सामने आने वाला है, उसे हम चाहते हैं कि आज ही के दिन हमारी आँखों के सामने आ जाए।

ईश्वर के संसार में इंसान प्रत्यक्ष रूप में एक विरोधाभास है। एक ऐसे संसार में जहाँ सूरज प्रतिदिन अपने ठीक समय पर निकलता है, वहाँ इंसान की स्थिति यह है कि आज वह एक बात कहता है और कल वह इससे पलट जाता है। जिस संसार में कठोर पत्थर के अंदर से भी पानी निकल पड़ता है, वहाँ एक इंसान दूसरे इंसान के साथ बहुत ही क्रूरता का प्रमाण देता है।

जिस संसार में चाँद समस्त प्राणियों के ऊपर बिना भेदभाव के चमकता है, वहाँ इंसान एक के साथ कुछ व्यवहार करता है और दूसरे के साथ कुछ। जिस संसार का विवेक अपने आपको फूलों की कोमलता की स्थिति में प्रकट करता है, वहाँ इंसान काँटों से भी अधिक बुरे चरित्र का प्रदर्शन करता है। जिस संसार में हवाओं के झोंके चारों ओर नि:स्वार्थ सेवक की तरह प्रवाहित हैं, वहाँ इंसान इस प्रकार रहता है, जैसे निजी स्वार्थ पूरा करने के अतिरिक्त उसका कोई और उद्देश्य ही नहीं। जिस संसार में एक वृक्ष दूसरे वृक्ष को दुख नहीं देता, वहाँ एक इंसान दूसरे इंसान को सताता है। एक इंसान दूसरे इंसान को बरबाद करके प्रसन्न होता है।

यह सब कुछ इस संसार में प्रतिदिन हो रहा है, लेकिन ईश्वर यहाँ हस्तक्षेप नहीं करता और न ही वह इस विरोधाभास को समाप्त करता है। रचनाओं के लौकिक दर्पण में ईश्वर कितना सुंदर प्रतीत होता है, लेकिन इंसानी जीवन के जटिल होने में उसका चेहरा कितना अलग है। ईश्वर के सामने दरिंदगी की

घटनाएँ घटती हैं, लेकिन उसके अंदर कोई तड़प पैदा नहीं होती। ईश्वर इंसानों को बलि पर चढ़ते हुए देखता है, लेकिन उसे उनकी कोई परवाह नहीं होती। वह सृष्टि के सबसे संवेदनशील लोगों के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार का अवलोकन करता है, लेकिन उसके विरुद्ध उसके भीतर कोई व्याकुलता नहीं होती। क्या ईश्वर पत्थर की मूर्ति है? क्या वह एक बहुत ही सफल मूर्ति है, जो सब कुछ देखता है, लेकिन उसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करता?

इस प्रश्न ने हर युग के सोचने वालों को सबसे अधिक परेशान किया है, लेकिन यह प्रश्न केवल इसलिए पैदा होता है कि रचनाओं के विषय में हम रचनाकार की तत्वदर्शिता का आदर नहीं करते। रचयिता की योजना में संसार परीक्षा-गृह है, लेकिन हम इसको प्रत्युपकार-गृह के रूप में देखना चाहते हैं। जो कुछ कल के दिन सामने आने वाला है, उसे हम चाहते हैं कि आज ही के दिन हमारी आँखों के सामने आ जाए।

जिस प्रकार प्रतिदिन रात के अँधेरे के बाद सूर्य का प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार अनिवार्यत: यह भी होने वाला है कि जीवन का अंधकार समाप्त हो। पीड़ित और अत्याचारी एक-दूसरे से अलग किए जाएँ। विद्रोही इंसानों की गर्दनें तोड़ी जाएँ और सच्चे इंसानों को उनकी सच्चाई का पुरस्कार दिया जाए। यह सब कुछ अपने पूर्णतम रूप में होगा; लेकिन वह मृत्यु के बाद होगा, न कि मृत्यु से पहले।

लोक-परलोक

इंसान की इच्छाएँ बजाय स्वयं एक वास्तविक इंसानी माँग हैं, लेकिन इस माँग के पूरा होने की जगह मृत्यु के पश्चात आने वाला अगला संसार है, न कि मृत्यु से पहले का वर्तमान संसार।

इंसान की सबसे बड़ी माँग क्या है? वह यह है कि उसे प्रसन्नता से परिपूर्ण जीवन प्राप्त हो। हर युग में इंसान का सबसे बड़ा सपना यही रहा है। इंसान इसी इच्छा को लेकर जीता है, लेकिन हर इंसान इस इच्छा को पूरा किए बिना ही मर जाता है। सारे दर्शन, सारे दृष्टिकोण और सारे इंसानी प्रयास इसी चीज़ के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं, लेकिन आज तक इंसान इसे न तो वैचारिक रूप से प्राप्त कर सका और न ही व्यावहारिक रूप से इस मंज़िल तक पहुँचने में सफल हो सका।

इस असफलता का कारण केवल एक है और वह यह कि सभी लोग अपने स्वप्न का फल इसी संसार में पाना चाहते हैं, लेकिन हज़ारों वर्ष के अनुभव ने केवल एक चीज़ सिद्ध की है और वह यह कि वर्तमान संसार इस इच्छा को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। वर्तमान संसार की सीमितता, वर्तमान संसार में इंसानी स्वतंत्रता का अनुचित प्रयोग बहुत ही निर्णायक रूप से इसमें रुकावट है कि वर्तमान संसार इंसानी सपनों का फल बन सके।

हम जीवन को सफल बनाने की ओर अभी यात्रा कर ही रहे होते हैं कि हम मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। हम मशीनी उन्नतियों को अस्तित्व में लाते हैं, लेकिन अचानक समस्या उत्पन्न होकर सारी प्रगति को अर्थहीन बना देती है। हम अनेक बलिदानों को देकर एक राजनीतिक व्यवस्था को अस्तित्व में लाते हैं, लेकिन सत्ता की कुर्सी पर बैठने वालों का बिगाड़ इसको

व्यावहारिकता से बेनतीजा बना देता है। हम अपनी पसंद के अनुसार एक जीवन बनाने का प्रयास करते हैं, लेकिन दूसरे इंसानों का द्वेष, ईर्ष्या, घमंड, अत्याचार और प्रतिशोध प्रकट होकर हमें उलझा लेता है और हम अपने घर को स्वयं अपनी आँखों से बिखरता हुआ देखकर इस संसार से चले जाते हैं।

यह निरंतर अनुभव सिद्ध करते हैं कि हमारे नवयुवकों का संसार वर्तमान धरातलीय परिस्थितियों में नहीं बन सकता। इसके लिए दूसरे संसार और दूसरी परिस्थितियों की आवश्यकता है। इंसान की इच्छाएँ बजाय स्वयं एक वास्तविक इंसानी माँग हैं, लेकिन इस माँग के पूरा होने की जगह मृत्यु के पश्चात आने वाला अगला संसार है, न कि मृत्यु से पहले का वर्तमान संसार।

यही वह अकेली चीज़ है, जो हमारे संसार के जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है। इसके बाद वर्तमान संसार संघर्ष का संसार बन जाता है और अगला संसार संघर्ष का परिणाम पाने का संसार। इसके बाद इंसान अपनी उस मंज़िल को प्राप्त कर लेता है, जिसकी ओर वह संतुष्ट होकर बढ़ सके। वर्तमान संसार को मंज़िल समझने के रूप में इंसान निराशा और मानसिक भटकाव के अतिरिक्त और कहीं नहीं पहुँचता। जबकि परलोक के संसार को मंज़िल समझने की आस्था उसके सामने शांति का द्वार खोल देती है। एक ऐसा संसार जहाँ खोने के अतिरिक्त और कुछ न हो, वहाँ वही दृष्टिकोण सही हो सकता है, जो खोने में पाने का रहस्य बता रहा हो।

इंसान का दुखांत

जो इंसान अपने वर्तमान संसार को आने वाले संसार के लिए बलिदान कर सके, वही आने वाले स्वर्गिक संसार को पाएगा।

यह जुलाई की एक सुंदर सुबह थी। सूरज अभी निकला नहीं था, लेकिन आसमान की विशालताओं में उसका फैलता हुआ प्रकाश बता रहा था कि वह जल्द ही निकलने वाला है। क्षितिज पर बादलों के टुकड़ों के पीछे से फूटने वाली सूरज की किरणें अद्भुत रंग-बिरंगें दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं। पेड़ों की हरियाली, चिड़ियों की चहचाहट और सुबह की हवा के कोमल झोंके वातावरण की कोमलता को और बढ़ा रहे थे। मेरी ज़ुबान से अचानक निकला— ईश्वर का संसार बहुत हद तक अर्थपूर्ण है, लेकिन वह तब उस समय बहुत हद तक अर्थहीन हो जाता है, जब तक इसके साथ परलोक को शामिल न किया जाए।

संसार अत्यंत आनंदमय है, लेकिन इसका आनंद कुछ पलों से अधिक शेष नहीं रहता। संसार वास्तव में बहुत सुंदर है, लेकिन इसे देखने वाली आँख की रोशनी जल्दी चली जाती है। संसार में सम्मान और प्रसन्नता प्राप्त करना इंसान को कितना अधिक अपेक्षित है, लेकिन सांसारिक सम्मान और प्रसन्नता इंसान अभी पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाता कि उस पर प्रकृति का क़ानून जारी हो जाता है। संसार में वह सब कुछ जिसको इंसान चाहता है, लेकिन इस सब कुछ को प्राप्त करना इंसान के लिए संभव नहीं, यहाँ तक कि उस सौभाग्यशाली इंसान के लिए भी नहीं, जो प्रत्यक्ष रूप में सब कुछ प्राप्त कर चुका हो।

इंसान एक पूर्ण अस्तित्व है, लेकिन इसका दुखांत यह है कि वह तरह-

तरह की सीमितताओं का शिकार है और बहुत-सी प्रतिकूल परिस्थितियाँ उसे घेरे हुए हैं। इंसान का जीवन पूर्ण जीवन होने के बाद भी उस समय अर्थहीन हो जाता है, जब तक उसे एक ऐसा संसार न मिले, जो हर प्रकार की सीमितताओं और प्रतिकूल परिस्थितियों से पवित्र हो।

ईश्वर ने यह पूर्ण और अनंत संसार स्वर्ग के रूप में बनाया है, लेकिन यह संसार किसी को अपने आप नहीं मिल सकता। इस आने वाले परिपूर्ण संसार का मूल्य वर्तमान अपूर्ण संसार है। जो इंसान अपने वर्तमान संसार को आने वाले संसार के लिए बलिदान कर सके, वही आने वाले स्वर्गिक संसार को पाएगा और जो इंसान इस बलिदान के लिए तैयार न हो, वह भी हालाँकि मृत्यु के बाद स्थायी संसार में प्रवेश करेगा, लेकिन उसके लिए यह स्थायी संसार पछतावों और निराशाओं का संसार होगा, न कि आनंद और प्रसन्नता का संसार।

विपरीतता समाप्त होगी

आवश्यक है कि वह दिन आए, जब सृष्टि की यह विपरीतता समाप्त हो, ईश्वर की इच्छा इंसानी संसार में भी इसी प्रकार पूरी होने लगे, जिस प्रकार वह शेष संसार में पूरी हो रही है।

मैं आबादी से दूर एक पहाड़ के सामने खड़ा था। हरे-भरे पेड़ मेरे सामने फैले हुए थे। चिड़ियों की चहचाहने की आवाज़ कानों में आ रही थी। विभिन्न प्रकार के जानवर चलते-फिरते नज़र आ रहे थे। यह देखकर मेरे ऊपर विचित्र-सा प्रभाव हुआ। कैसा महान और कैसा पूर्ण होगा वह ईश्वर, जिसने इतना बड़ा संसार बनाया और फिर उसको विवश कर दिया कि वह उसकी बनाई

हुई योजना का बाध्य रहते हुए गतिविधि करे!

कितना सुंदर और कितना अबोध है यह संसार! यहाँ चिड़ियाँ वही आवाज़ें निकालती हैं, जो उनके रचयिता ने उन्हें सिखाया है। यहाँ बिल्ली और बकरी उसी प्रकार अपना-अपना खाना खाते हैं, जो जन्म से उनके लिए निर्धारित कर दिया गया है। यहाँ पेड़ ठीक उसी योजना के अनुसार उगते और बढ़ते हैं, जो अनादिकाल से उनके स्वामी ने उनके लिए निर्धारित कर दी है। यहाँ नदी ठीक उसी नियम के अंतर्गत बहती है, जो उसके लिए सदैव से निश्चित है। ईश्वर की सृष्टि अत्यंत पूर्ण समूह है और यहाँ की हर चीज़ निम्न अवहेलना के बिना उसी प्रकार क्रिया करती है, जिसका आदेश उसके ईश्वर ने उसको दे रखा है।

फिर भी इंसान का मामला इससे बहुत अलग है। वह अपने मुँह से ऐसी आवाज़ें निकालता है, जिसकी अनुमति उसके ईश्वर ने उसे नहीं दी। वह ऐसी चीज़ों को अपना भोजन बनाता है, जिससे उसके मालिक ने उसे रोक रखा है। वह अपनी जीवन-यात्रा के लिए ऐसे रास्ते तय करता है, जहाँ अनादिकाल से लिखने वाले ने पहले से ही उसके लिए लिख दिया है कि 'यहाँ से गुज़रना मना है'। इंसान ईश्वर के संसार का बहुत छोटा-सा हिस्सा है, लेकिन वह विशाल ब्रह्मांड की सामूहिक व्यवस्था से विद्रोह करता है, वह ईश्वर के सुधार किए हुए संसार में उपद्रव करता है।

यह ईश्वर के विपरीतताहीन संसार में विपरीतता को हस्तक्षेप करना है। यह 'एक ही जैसे समूह में' कोई और जोड़ लगाना है। यह एक सुंदर चित्र पर भद्देपन का धब्बा डालना है। यह एक पूर्ण संसार में अपूर्ण चीज़ की वृद्धि करना है। यह फ़रिश्तों की तन्मयता के वातावरण में शैतान[10] को तत्पर होने का अवसर देना है।

ईश्वर की प्रकृति और उसकी श्रेष्ठतम अभिरुचि का प्रमाण, जो

[10] ईश्वर की आज्ञा न मानने वाला उपद्रवी, जिसे ईश्वर ने बहिष्कृत किया, जो इंसानों को गुमराह करता है।

महानतम सृष्टि में हर पल नज़र आता है, वह इस विचार का खंडन करता है कि यह स्थिति इसी प्रकार बनी रहेगी। ईश्वर की प्रकृति निश्चित रूप से इस अत्याचार की अनुमति नहीं दे सकती। ईश्वर की श्रेष्ठतम अभिरुचि बिल्कुल भी इसे सहन नहीं कर सकती। आवश्यक है कि वह दिन आए, जब सृष्टि की यह विपरीतता समाप्त हो, ईश्वर की इच्छा इंसानी संसार में भी इसी प्रकार पूरी होने लगे, जिस प्रकार वह शेष संसार में पूरी हो रही है।

ऑपरेशन

इंसान पर वह समय आने वाला है, जब ईश्वरीय ऑपरेशन उसकी वास्तविकता को खोल देगा और उसके लिए अपने अपराधों को स्वीकार करने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय न रहेगा।

फ़ीनिक्स (अमेरिका) के अस्पताल में एक आदमी भर्ती हुआ। उसके पेट में बहुत तेज़ दर्द था। डॉक्टरों ने उससे ऑपरेशन की बात कही और इस प्रकार उसके पेट का ऑपरेशन किया गया। डॉक्टरों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके पेट में एक हीरा अटका हुआ है। यही हीरा उसके तेज़ दर्द का कारण था। हीरा उसके पेट से निकाल लिया गया। इस हीरे के साथ क़ीमत का एक पर्चा लगा हुआ था। उस पर्चे पर लिखा हुआ था—6,500 डॉलर।

तुरंत पुलिस को बुलाया गया। पूछताछ के दौरान मरीज़ ने बताया कि उसे पुरस्कार के रूप में यह हीरा मिला था और ग़लती से वह उसके पेट में चला गया। फिर भी बड़ी जल्दी पता चल गया कि वास्तविकता कुछ और है। यह आदमी एक बार हीरे की एक दुकान में गया और वहाँ से एक हीरा

चुरा लिया, लेकिन जब वह निकलने का प्रयास कर रहा था तो दुकानदार को संदेह हुआ। उसने आदमी का पीछा किया। जब उस आदमी ने देखा कि वह पकड़ा जाने वाला है तो उसने हीरे को झट से से मुँह में डाला और निगल लिया। पुलिस उसी की खोजबीन में थी, लेकिन अभी तक वह पुलिस के हाथ नहीं आया था। इसके बाद तुरंत उस आदमी को गिरफ़्तार कर लिया गया। (हिंदुस्तान टाइम्स, 5 नवंबर, 1981)

ग़लत तरीक़े से प्राप्त किया हुआ हीरा आदमी के पेट में पच नहीं सका। वह मजबूर हो गया कि छिपाए हुए हीरे को निकालकर बाहर लाए और स्वयं अपने अपराध का जीवित प्रमाण बन जाए। यही मामला ऐसी स्थिति में लोगों के साथ परलोक में होगा।

संसार में एक इंसान दूसरे इंसान का अधिकार छीनता है। वह किसी को स्वीकार्य कथन देने को तैयार नहीं होता, जो घटनानुसार उसे देना चाहिए। यह सब करके भी इंसान वर्तमान संसार में सफल रहता है। ज़ोर-ज़बरदस्ती और होशियारी से वह अपने अपराध को छिपा लेता है, लेकिन ऐसा केवल उस समय तक होता है, जब तक इंसान मृत्यु से दो-चार नहीं होता।

मृत्यु हर इंसान के लिए मानो प्रकृति का ऑपरेशन है, जो उसके अंदर को बाहर कर देता है और उसके छुपे को खुला बना देता है। जिस प्रकार हीरा इंसान के पेट में पच नहीं पाता, उसी प्रकार अत्याचार को भी ईश्वर का यह संसार कभी स्वीकार नहीं करता। इंसान पर वह समय आने वाला है, जब ईश्वरीय ऑपरेशन उसकी वास्तविकता को खोल देगा और उसके लिए अपने अपराधों को स्वीकार करने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय न रहेगा।

दो प्रकार की आत्माएँ

वर्तमान संसार में इंसान के लिए एक ही समय दोनों अवसर खुले हैं। वह चाहे तो अपनी आत्मा को पवित्र करे और चाहे तो अपवित्र करता रहे।

क़ुरआन के अध्याय नंबर 91 में कहा गया है— "वह आदमी सफल रहा, जिसने अपने आपको पवित्र किया और वह आदमी बरबाद हो गया, जिसने अपने आपको अपवित्र किया।" वर्तमान जीवन परलोक से पहले एक परीक्षा का अवसर है। जो इंसान यहाँ से उत्तम और पवित्र आत्मा लेकर परलोक में पहुँचेगा, वह वहाँ स्वर्ग के प्रसन्नता से परिपूर्ण वातावरण में बसाया जाएगा और जो इंसान यहाँ से बुराइयों में लिपटी हुई आत्मा लेकर परलोक में जाएगा, उसे वहाँ नरक के कष्टों से परिपूर्ण वातावरण में धकेल दिया जाएगा।

वर्तमान संसार जैसे ईश्वर की नर्सरी है। नर्सरी में विभिन्न प्रकार के पौधे उगाए जाते हैं। धरती में वृद्धि की शक्ति बहुत अधिक है। अत: यहाँ तरह-तरह के पौधे उग आते हैं। माली इन सबकी जाँच करता है। जो पौधे अवांछनीय (Undesirable) पौधे हैं, उनको वह काटकर फेंक देता है और जो पौधे उसे वांछित हैं, उनको वहाँ से निकालकर ले जाता है, ताकि किसी बाग़ में उनको फलने-फूलने के लिए रोप दिया जाए।

वर्तमान संसार में इंसान के लिए एक ही समय दोनों अवसर खुले हैं। वह चाहे तो अपनी आत्मा को पवित्र करे और चाहे तो अपवित्र करता रहे। एक इंसान वह है, जो ईश्वर की प्रशंसा को मानकर उसके आगे अपने आपको झुका देता है। उसके सामने जब कोई सच आता है, तो वह बेझिझक उसे स्वीकार कर लेता है। लोगों से व्यवहार करते हुए वह सदैव हितैषी और न्याय

की शैली धारण करता है। मित्रता हो या शत्रुता, प्रत्येक स्थिति में वह ईश्वर की इच्छा पर चलता है, न कि अपने मन की इच्छा पर। यह वह इंसान है, जिसने अपनी आत्मा को पवित्र किया। उसे उसका ईश्वर स्वर्ग के शोभित संसार में बसा लेगा।

दूसरा इंसान वह है, जो स्वयं अपनी बड़ाई में लगा रहता है। उसके सामने जब सच आता है तो वह उसे मानने के लिए तैयार नहीं होता। मामलों में वह विद्रोही और अन्याय की शैली धारण करता है। वह अपनी इच्छा पर चलता है, न कि ईश्वर की इच्छा पर। यही वह इंसान है, जिसने अपनी आत्मा को अपवित्र किया। ब्रह्मांड का स्वामी उसे अपने पड़ोस के लिए स्वीकार नहीं करेगा। वह उसे नरक में धकेल देगा, ताकि वह हमेशा के लिए अपने अपराध का दंड भुगतता रहे।

यह टकराव क्यों?

वर्तमान संसार परीक्षा का संसार है। आदर्श (Ideal) संसार उसके बाद आने वाला है और इंसान के सिवा शेष संसार उसी का एक प्रारंभिक परिचय है।

आसमान के नीचे घटने वाली सभी घटनाओं में सबसे अधिक विचित्र घटना यह है कि यहाँ दादागीरी के गुणों का प्रयोग है, लेकिन गंभीरता के गुणों का कोई प्रयोग नहीं। यहाँ चतुर आदमी अपनी पूरी क़ीमत पा लेता है, लेकिन सज्जन आदमी को यहाँ कोई क़ीमत नहीं मिलती। हर एक को प्रसन्न करने वाली भाषा बोलने वाले को यहाँ बहुत लोकप्रियता प्राप्त होती है, लेकिन जो आदमी बिना किसी भेदभाव की शैली में बोले और सच को सच और झूठ को झूठ बोले तो उसे यहाँ कोई आदर और लोकप्रियता प्राप्त नहीं होती।

यह सब एक ऐसे संसार में हो रहा है, जो अपने अस्तित्व की दृष्टि से बिल्कुल निर्मल है, जहाँ पेड़ एक बहुत ही सुंदर दृश्य का नमूना बनकर खड़े हुए हैं, जहाँ चिड़ियाँ उसके सिवा कोई और बोली नहीं जानतीं कि वे सुंदरता और शांति के गीत गाएँ, जहाँ सूरज और चाँद केवल प्रकाश बिखेरते हैं और उनको धुँधलापन बिखेरना और अँधेरा फैलाना नहीं आता, जहाँ तारे केवल अपनी-अपनी धुरी (Orbit) पर घूमते हैं और कोई तारा दूसरे की धुरी में प्रविष्ट होकर वहाँ अपना झंडा गाड़ने के लिए नहीं दौड़ता।

इंसान और शेष संसार में यह टकराव देखकर कुछ लोगों ने कहा कि यहाँ दो ईश्वर हैं— एक प्रकाश का और दूसरा अंधकार का। किसी ने कहा कि यहाँ कोई ईश्वर ही नहीं। अगर कोई ईश्वर होता तो संसार में यह अललटप व्यवस्था क्यों जारी रहती, लेकिन सही यह है कि वर्तमान संसार परीक्षा का संसार है। आदर्श (Ideal) संसार उसके बाद आने वाला है और इंसान के सिवा शेष संसार उसी का एक प्रारंभिक परिचय है।

परीक्षा की यह आवश्यक माँग थी कि इंसान को कर्म करने की पूरी स्वतंत्रता हो, इसी स्वतंत्रता का यह परिणाम है कि कोई इंसान सीधा रास्ता अपनाता है और कुछ लोग टेढ़े रास्ते पर चलते हैं, लेकिन महाप्रलय के बाद जब आदर्श संसार स्थापित होगा तो वहाँ वही लोग जगह पाएँगे, जिन्होंने वर्तमान संसार में इस बात का प्रमाण दिया होगा कि वे आदर्श शैली में सोचने और आदर्श चरित्र के साथ जीवन व्यतीत करने की योग्यता रखते हैं और शेष सभी लोग छाँटकर उसी प्रकार दूर फेंक दिए जाएँगे, जैसे कूड़ा-करकट समेटकर फेंक दिया जाता है।

तोले जाने से पहले तोल लो

उस समय का आना भाग्य है। कोई इंसान न तो इसे टाल सकता है और न ही कोई इंसान अपने आपको इससे बचा सकता है। केवल वही इंसान सफल है, जो आज ही अपने आपको ईश्वर के तराज़ू में खड़ा कर ले।

वर्तमान संसार में चीज़ों के दो रूप हैं— एक प्रत्यक्ष और दूसरा अप्रत्यक्ष यानी छिपा हुआ। यहाँ हर इंसान के लिए यह संभव है कि वह अपने भीतरी अस्तित्व में बुराई लिये हो, लेकिन ज़ुबान से सुंदर शब्द बोलकर अपने आपको अच्छा दिखाए। महाप्रलय इसलिए आएगी कि वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष के इस अंतर को मिटा दे। महाप्रलय का भूकंप सारे प्रत्यक्ष आवरणों को फाड़ देगा, ताकि हर इंसान के ऊपर से उसका ख़ोल उतर जाए और वह अपनी वास्तविक स्थिति में सामने आ जाए।

वह दिन भी कैसा विचित्र होगा, जब वास्तविकताओं से पर्दा उठाया जाएगा। कितने लोग जो आज न्याय की कुर्सियों पर बैठे हुए हैं, उस दिन वे सब अपराधियों के कटघरे में नज़र आएँगे। कितने लोग जो आज प्रमुख व्यक्ति समझे जाते हैं, उस दिन वे कीड़े-मकोड़ों से भी अधिक तुच्छ दिखाई देंगे। कितने लोग जिनके पास आज हर बात का उत्तम उत्तर होता है, उस दिन वे निरुत्तर हो जाएँगे, जैसे उनके मुँह में शब्द ही नहीं।

आज एक इंसान के लिए यह संभव है कि वह अपने पड़ोसी को सताए और इसके पश्चात भी उसे धार्मिकता की स्टेज पर बैठने के लिए स्पष्ट जगह मिली हुई हो। एक इंसान अपनी महानता दिखाने के लिए तत्पर हो, फिर भी

वह मुजाहिदे-इस्लाम[11] के नाम से प्रसिद्धि पाए।

एक इंसान अपने मिलने-जुलने वालों के साथ अन्याय करे और इसके पश्चात शांति एवं न्याय की सभाओं में उसे अध्यक्षता करने के लिए बुलाया जाए। एक इंसान का एकांत ईश्वर की याद से ख़ाली हो, लेकिन सामूहिक स्थलों पर वह ईश्वर के नाम का झंडा उठाने वाला समझा जाता हो। एक इंसान के अंदर पीड़ित का समर्थन करने की कोई भावना न हो, इसके पश्चात भी अख़बारों के पन्नों पर उसे पीड़ितों के समर्थक की हैसियत से दिखाया जा रहा हो।

ईश्वर हर इंसान की वास्तविकता से परिचित है, लेकिन संसार में ईश्वर लोगों की वास्तविकता छिपाए हुए है। परलोक में वह एक-एक की वास्तविकता को प्रकट कर देगा। वह समय आने वाला है, जब ईश्वर का तराज़ू खड़ा हो और हर इंसान को तोलकर दिखाया जाए कि कौन क्या था और कौन क्या नहीं था। उस समय का आना नियति है। कोई इंसान न तो इसे टाल सकता है और न ही कोई इंसान अपने आपको इससे बचा सकता है। केवल वही इंसान सफल है, जो आज ही अपने आपको ईश्वर के तराज़ू में खड़ा कर ले; क्योंकि जो इंसान कल ईश्वर के तराज़ू में खड़ा किया जाए, उसके लिए बरबादी के अलावा और कुछ नहीं।

11 ईश्वर की राह में संघर्ष करने वाला।

धोखेबाज़ी

इंसान अपने साधारण कार्य को बहुत बड़ा कार्य सिद्ध करके प्रसन्न है, लेकिन मृत्यु इन सारी ख़ुशफ़हमियों को झूठा साबित कर देगी।

ब्रिटेन का एक आर्टिस्ट है, जिसका नाम स्टीफ़न प्रिस्टले (जन्म : 1954) है। चेस्टर (इंग्लैंड) में एक नीलामी में उसकी चार तस्वीरें रखी गईं। उसकी तस्वीरों की क़ीमत केवल एक पौंड लगी। इस प्रकार स्टीफ़न प्रिस्टले को एक पौंड का चेक दे दिया गया।

ब्रिटेन का आर्टिस्ट एक पौंड का चेक पाकर बहुत नाराज़ हुआ। उसके निकट उसकी इन चार तस्वीरों की क़ीमत इससे बहुत अधिक थी, जितनी क़ीमत उसे ख़रीददार की ओर से मिली। उसने अपने चेक पर एक पौंड की धनराशि को 1001 पौंड बना दिया। सामयिक रूप से उसने बैंक से 1001 पौंड की धनराशि प्राप्त कर ली, लेकिन बहुत जल्द ही बैंक वालों को पता चल गया कि उसने बैंक के सामने जो चेक प्रस्तुत किया, उसकी धनराशि फ़र्ज़ी थी। स्टीफ़न को पुलिस के हवाले कर दिया गया। अब वह जेल में धोखेबाज़ी के अपराध में सज़ा भुगत रहा है।

(हिंदुस्तान टाइम्स, 2 अक्टूबर, 1981)

इस घटना का संबंध संसार के मामले से है, लेकिन इसी से परलोक के मामले की तस्वीर भी देखी जा सकती है। बहुत से लोग जिनके पास केवल एक पौंड की 'धनराशि' है, लेकिन वे उसे एक हज़ार एक पौंड दिखाकर कैश कराना चाहते हैं— कोई धार्मिक कार्य कर रहा है और उसी को वह पूरा कार्य बताता है, कोई निजी प्रसिद्धी के लिए सक्रिय है और उसे धर्मसेवा का नाम दिए हुए है, कोई अपनी राजनीतिक अभिरुचि की संतुष्टि कर रहा है और

कहता है कि वह इस्लामी व्यवस्था स्थापित करने के लिए सामने आया है, कोई वाद-विवाद में व्यस्त है और समझता है कि वह इस्लाम के पुनर्जागरण का मुजाहिद[12] है और कोई मामूली सुधार का कार्य कर रहा है और उसे दावत व तबलीग़[13] का शानदार नाम दिए हुए है।

इनमें से हर इंसान वर्तमान संसार में पूर्ण रूप से अपनी क़ीमत वसूल कर रहा है। वह अपने साधारण कार्य को बहुत बड़ा कार्य सिद्ध करके प्रसन्न है, लेकिन मृत्यु इन सारी ख़ुशफ़हमियों को झूठा साबित कर देगी। मृत्यु के पश्चात आने वाली अदालत में ऐसे सारे लोग धोखेबाज़ी के अपराधी घोषित कर दिए जाएँगे, चाहे वर्तमान संसार में वे अपने एक पौंड के चेक से एक हज़ार एक पौंड की धनराशि कैश कराने में सफल हो जाएँ।

मृत्यु का स्मरण करो

मृत्यु इंसान को याद दिलाती है कि वह आज से ऊपर उठकर सोचे। वह सफलता को जीवन के उस पार खोजे।

कछुआ पाँच सौ वर्ष तक जीवित रहता है। पेड़ एक हज़ार वर्ष तक धरती पर खड़ा रहता है। पहाड़ और नदी लाखों-करोड़ों वर्ष तक अपने गौरव को बनाए रखते हैं, लेकिन इंसान की उम्र पचास वर्ष या सौ वर्ष से अधिक नहीं। इंसान प्रत्यक्ष रूप से समस्त प्राणियों में सबसे अधिक शिष्ट और श्रेष्ठ है, लेकिन वह सबसे कम जीवन पाता है।

इससे भी अधिक अद्भुत बात यह है कि यह संक्षिप्त जीवन भी

[12] संघर्ष करने वाला।

[13] सच्चाई की तरफ़ बुलाना।

असफलताओं की एक निरंतर कहानी के सिवा और कुछ नहीं। इंसान का जीवन शोक और दुख से इतना अधिक भरा हुआ है कि प्रसन्नता के पल लापरवाही की कुछ झलकियों से अधिक वास्तविकता नहीं रखते। बीमारी, दुर्घटना, बुढ़ापा और आशाओं के लगातार टूटने का नाम जीवन है और अंततः इस प्रकार के कष्टदायी दिनों को व्यतीत करते हुए एक दिन मृत्यु के आगे पराजित हो जाना।

एक ग़रीब आदमी को खेद होता है कि उसके पास बड़ा घर नहीं। उसके पास जीवन की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन नहीं, लेकिन दूसरी ओर उन लोगों की स्थिति भी बहुत अधिक अलग नहीं, जिनको एक ग़रीब आदमी उनके जैसा होने की दृष्टि से देखता है। धनवान आदमी के लिए पैसा होना इससे अधिक बड़ी समस्याएँ पैदा करता है, जो एक ग़रीब आदमी को पैसा न होने की स्थिति में नज़र आती हैं। एक प्रसिद्ध आदमी जिसके चारों ओर लोगों की भीड़ लगी हुई हो, अंदर से इस प्रकार व्याकुल होता है कि रात को गोली खाए बिना उसे नींद नहीं आती। कहने का अर्थ यह है कि इस संसार में हर इंसान दुखी है, कोई एक रूप में तो कोई दूसरे रूप में।

आप मान लें कि कोई इंसान प्रतिकूल परिस्थितियों से बच जाए और इस सौभाग्य को प्राप्त कर ले जिसको सुख-चैन कहते हैं, तब भी कितने दिन तक? अगर कोई इंसान संयोगी साधनों के अंतर्गत प्रसन्नता का भंडार अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा कर ले तो वह भी बस सुबह से शाम तक के लिए होगा। इसके बाद अचानक मृत्यु का निर्दयी देवता आएगा और उसे इस प्रकार पकड़ लेगा कि न उसकी संपत्ति उसे बचा सकेगी और न ही उसकी फ़ौज। हवाई जहाज़ के यात्री को भी मृत्यु इसी प्रकार नियंत्रण में ले लेती है, जिस प्रकार एक पैदल चलने वाले आदमी को। वह शानदार महलों में भी इसी प्रकार विजयी अंदाज़ में प्रविष्ट हो जाती है, जिस प्रकार एक टूटे-फूटे मकान में। मृत्यु इंसान की सबसे बड़ी मजबूरी है।

मृत्यु इंसान को याद दिलाती है कि वह आज से ऊपर उठकर सोचे। वह

सफलता को जीवन के उस पार खोजे। सफल इंसान वही है, जो मृत्यु से यह सीख प्राप्त कर ले। जो इंसान यह सीख लेने से वंचित रहे, उसकी प्रसन्नता के दीये बहुत जल्द बुझ जाएँगे। वह अपने आपको एक ऐसे भयानक अँधेरे में पाएगा, जहाँ वह सदैव ठोकरें खाता रहे और कभी इससे निकल न सके।

कुछ काम न आएगा

क़यामत का भूचाल वर्तमान भूचाल से अरबों-खरबों गुणा अधिक कठोर होगा। उस समय सारे सहारे टूट जाएँगे। हर इंसान अपनी होशियारी भूल जाएगा। महानता के सारे स्तंभ इस प्रकार गिर चुके होंगे कि उनका कहीं कोई अस्तित्व न होगा।

एक साहब से बात हो रही थी। 20 वर्ष पहले वह एक मामूली मिस्त्री थे। अब वह लगभग दो दर्जन मशीनों के मालिक हैं। उनके कई कारख़ाने चल रहे हैं। मैंने एक मुलाक़ात में कहा, “माशा अल्लाह! आपने अपने कारोबार में काफ़ी तरक़्क़ी की है।” उन्होंने बड़े विश्वासपूर्ण और प्रसन्न स्वर में उत्तर दिया, “इतनी कमाई कर ली है कि बच्चे अगर कुछ न करें, तब भी वे सौ वर्ष तक आराम से खाते रहेंगे।”

यह एक बड़ा महत्वपूर्ण उदाहरण है। अगर देखा जाए तो आज के दौर में हर इंसान का यही हाल हो रहा है। हर इंसान अपने-अपने क्षेत्र में यही विश्वास लिये हुए है कि उसने अपने मामलों को ठीक कर लिया है। उसे अब किसी ख़तरे से डरने की आवश्यकता नहीं, कम-से-कम ‘सौ वर्ष’ तक तो बिल्कुल नहीं।

कोई अपने बड़ों को प्रसन्न करके संतुष्ट है तो किसी को यह गर्व है कि

उसने अपने क़ानूनी काग़ज़ों को पक्का कर लिया है। किसी को अपने भरोसे लायक़ माध्यमों और बैंक बैलेंस पर गर्व है तो कोई आदमी अपने बाहुबल और दादागीरी पर भरोसा किए हुए है। किसी के पास कुछ नहीं है तो जिसके पास है, वह उससे चापलूसी और समझौते का संबंध करके समझता है कि उसने भी एक छतरी प्राप्त कर ली है, अब उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं; लेकिन भूचाल जब आता है तो इस प्रकार के सारे भरोसों को झूठा सिद्ध कर देता है। भूचाल के लिए पक्के महल और कच्ची झोंपड़ियों में कोई अंतर नहीं। बलवान और निर्बल, दोनों इसके लिए तो बराबर हैं। वह निःसहाय (Destitute) लोगों को भी इसी प्रकार तहस-नहस कर देता है, जिस प्रकार उन लोगों को जो मज़बूत सहारा पकड़े हुए हैं। भूचाल यह याद दिलाता है कि इस संसार में इंसान कितना लाचार है।

यह भूचाल ईश्वर की एक एडवांस निशानी है, जो बताती है कि हर एक के लिए अंततः क्या होने वाला है। भूचाल एक प्रकार की छोटी प्रलय है, जो बड़ी प्रलय का पता देती है। जब डरावनी गड़गड़ाहट लोगों के होश उड़ा देती है, जब मकान-के-मकान ताश के पत्तों की तरह गिरने लगते हैं, जब धरती का निचला हिस्सा ऊपर आ जाता है और ऊपर का नीचे दफ़न हो जाता है तो उस समय इंसान जान लेता है कि वह प्रकृति की शक्ति के आगे बिल्कुल लाचार है। उसके लिए केवल यह भाग्य है कि लाचारी के साथ अपनी बरबादी का तमाशा देखे और इसकी तुलना में कुछ न कर सके।

क़यामत[14] का भूचाल वर्तमान भूचाल से अरबों-खरबों गुणा अधिक कठोर होगा। उस समय सारे सहारे टूट जाएँगे। हर इंसान अपनी होशियारी भूल जाएगा। महानता के सारे स्तंभ इस प्रकार गिर चुके होंगे कि उनका कहीं कोई अस्तित्व न होगा। उस दिन वही सहारे वाला होगा, जिसने वर्तमान चीज़ों को बेसहारा समझा था। उस दिन वही सफल होगा, जिसने उस समय ईश्वर को अपनाया था, जब सारे लोग ईश्वर को भूलकर

---

[14] सृष्टि के विनाश और अंत का दिन।

दूसरी छतरियों की शरण लिये हुए थे।

पहचान-पत्र के बिना

वह समय आने वाला है, जब किसी आँख के लिए सबसे अधिक सुंदर दृश्य यह होगा कि वह अपने रचयिता को देखे।

गाँव का रहने वाला एक लड़का शहर आया। सड़क पर चलते हुए वह एक स्कूल की इमारत के सामने से गुज़रा। यह स्कूल के जश्न का दिन था। सैकड़ों लड़के एक खिड़की के सामने लाइन लगाकर खड़े थे। उस देहाती लड़के ने पास जाकर देखा तो पता चला कि उस खिड़की पर मिठाई बँट रही है और हर एक उसको ले-लेकर बाहर आ रहा है। देहाती लड़का भी लाइन के साथ आगे बढ़ता रहा। वह समझता था कि जब मेरा नंबर आएगा तो मिठाई का पैकेट उसी प्रकार मेरे हाथ में भी होगा, जिस प्रकार वह दूसरों के हाथ में दिखाई दे रहा है।

लाइन एक के बाद एक आगे बढ़ती रही। यहाँ तक कि वह देहाती लड़का खिड़की के सामने पहुँच गया। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपना हाथ खिड़की की ओर आगे बढ़ाया। इतने में खिड़की के पीछे से आवाज़ आई— 'तुम्हारा पहचान-पत्र'। उस लड़के के पास कोई पहचान-पत्र न था। वह पहचान-पत्र प्रस्तुत न कर सका, इसलिए उसे खिड़की से हटा दिया गया। अब लड़के को पता चला कि यह मिठाई उन लोगों को बाँटी जा रही थी, जो वर्ष भर इस स्कूल के विद्यार्थी थे, न कि किसी ऐसे आदमी को, जो अचानक कहीं से आकर खिड़की पर खड़ा हो गया हो।

ऐसा ही कुछ मामला परलोक में घटित होने वाला है। परलोक ईश्वर के निर्णय का दिन है। इस दिन सारे लोग ईश्वर के यहाँ जमा किए जाएँगे। वहाँ

लोगों को पुरस्कार बाँटे जा रहे होंगे, लेकिन पाने वाले केवल वही होंगे, जिन्होंने इस दिन के आने से पहले पाने का अधिकार पैदा किया हो, जो अपना पहचान-पत्र लेकर वहाँ उपस्थित हुए हों।

वह समय आने वाला है, जब किसी आँख के लिए सबसे अधिक सुंदर दृश्य यह होगा कि वह अपने रचयिता को देखे। किसी हाथ के लिए सबसे अधिक प्रसन्नता का अनुभव यह होगा कि वह अपने रचयिता को छुए। किसी सिर के लिए सबसे अधिक सम्मान और गर्व की बात यह होगी कि वह इसे संपूर्ण संसार के रचयिता के आगे झुका दे, लेकिन यह सब कुछ केवल उन लोगों के लिए होगा, जिन्होंने इस दिन के आने से पहले अपने आपको ईश्वर की सृष्टि में दया का पात्र सिद्ध किया हो। शेष लोगों के लिए उनकी लापरवाही उनके और उनके ईश्वर के बीच रुकावट बन जाएगी। वे ईश्वर के संसार में पहुँचकर भी ईश्वर को न देख पाएँगे। वे पाने वाले दिन भी अपने लिए कुछ पाने से वंचित रहेंगे।

स्वर्ग वाले

स्वर्ग की एक प्रतिकृति (Replication) इसी संसार में है और पारलौकिक (Transcendental) स्वर्ग में वही इंसान जाएगा, जिसने संसार में स्वर्ग की इस प्रतिकृति को पा लिया हो।

क़ुरआन में बताया गया है कि ईमान वालों को जिस स्वर्ग में प्रविष्ट किया जाएगा, उसकी पहचान उन्हें इसी संसार में कराई जा चुकी होगी। दूसरी जगह कहा गया है कि स्वर्ग की जीविका उस जीविका के समान होगी,

जिसकी तौफ़ीक़[15] उन्हें सांसारिक जीवन में मिली थी।

हदीस[16] में कहा गया है कि स्वर्ग और नरक वास्तव में इंसान के ही कर्म हैं, जो इंसान की ओर लौटाए जाते हैं।

इससे पता चलता है कि स्वर्ग में प्रवेश करने का प्रारंभ इसी संसार से हो जाता है। स्वर्ग में जाने वाला इंसान अपने स्वर्ग को इसी संसार में पा लेता है। जिस प्रकार स्वर्ग की एक प्रतिकृति (Replication) इसी संसार में है और पारलौकिक (Transcendental) स्वर्ग में वही इंसान जाएगा, जिसने संसार में स्वर्ग की इस प्रतिकृति को पा लिया हो। स्वर्ग की यही प्रतिकृति जैसे नक़द पुरस्कार है, जो वास्तविक पुरस्कार से पहले उसे एक प्रारंभिक प्रतीक के रूप में दे दिया जाता है।

यह स्वर्ग वाला कौन है? यह वह इंसान है, जिसने संसार में उन अवस्थाओं का अनुभव किया हो, जो परलोक में उसे स्वर्ग का पात्र बनाने वाले हैं। जिसके रोंगटे खड़े होकर उसे ईश्वर के निरीक्षण का अहसास दिला चुके हों, जिसके दिल पर टुकड़े कर देने वाले प्रकाश के अवतरण ने उसे ईश्वर की निकटता से परिचित किया हो, जिसने द्वेष व प्रतिशोध की भावना को अपने अंदर कुचलकर ईश्वरीय क्षमा का अवलोकन किया हो, जिसने अपनी शर्मिंदगी के आँसुओं में वह दृश्य देखा हो, जबकि एक दयालु स्वामी अपने सेवक को स्वीकार करने पर इसे अनदेखा करता है।

जिस पर यह पल गुज़रा हो कि एक आदमी पर नियंत्रण पाने के पश्चात भी वह उसे इसलिए छोड़ दे कि उसका ईश्वर भी उस दिन उसे छोड़ दे, जबकि वह उससे अधिक निर्बलता की स्थिति में होगा। जो एक सच बात के आगे इस प्रकार गिर पड़े, जैसे लोग न्याय के दिन ईश्वर को देखकर गिर पड़ेंगे।

वास्तविकता यह है कि मोमिन स्वर्ग का एक फूल है। वह वर्तमान संसार

---

15 ईश्वर की कृपा, सामर्थ्य, मार्गदर्शन, शक्ति इत्यादि।

16 हज़रत मुहम्मद की कही हुई बातें।

में आने वाले संसार की प्रारंभिक कली है। मोमिन पर वह सारे अनुभव इसी संसार में गुज़र जाते हैं, जो दूसरों पर मृत्यु के पश्चात गुज़रने वाले हैं। इंसान के जीवन में विभिन्न प्रकार की जो परिस्थितियाँ गुज़रती हैं, उन्हीं में हर इंसान का स्वर्ग और नरक छिपा हुआ होता है। इन परिस्थितियों में शैतानी प्रतिक्रिया व्यक्त करके कोई आदमी नरक का पात्र बन जाता है तो कोई फ़रिश्तों वाली प्रतिक्रिया व्यक्त करके स्वर्ग का पात्र।

प्लास्टिक के फल और फूल

वह हर चीज़ से अधिक ईश्वर से डरने लगता है और हर चीज़ से अधिक ईश्वर से प्रेम करने लगता है। वह अपनी निजी हस्ती को ईश्वर की महानतम हस्ती में खो देता है।

आजकल प्लास्टिक के फल और फूल बनते हैं। देखने में ये बिल्कुल फूल और फल की तरह मालूम होंगे, लेकिन जब सूँघें तो उनमें न तो फूल की कोई ख़ुशबू मिलती है और मुँह में डालने पर न ही उनमें फल का स्वाद। इसी प्रकार वर्तमान युग में धार्मिकता की विचित्र श्रेणी अस्तित्व में आई है। स्पष्ट रूप से इसमें धूम की हद तक धर्म दिखाई देगा, लेकिन निकट से अनुभव कीजिए तो वही चीज़ उपस्थित न होगी, जो धर्म का वास्तविक सार है— ईश्वर का डर और इंसान का दर्द। प्लास्टिक के दौर में शायद धार्मिकता भी प्लास्टिक की धार्मिकता बनकर रह गई है।

लोग धार्मिक हैं, लेकिन कोई इंसान अपनी ग़लती मानने को तैयार नहीं। कोई इंसान ईश्वर के लिए अपनी अकड़ समाप्त करना नहीं जानता। व्यक्तिगत लाभ के लिए असंख्य लोग अपने मतभेदों और शिकायतों को

भूलकर दूसरों से जुड़े हुए हैं, लेकिन ईश्वर की धरती पर ऐसा कोई नहीं, जो ईश्वर के लिए अपने मतभेदों व शिकायतों को भूलकर दूसरों से जुड़ जाए।

धर्म वास्तव में इसका नाम है कि इंसान इस वास्तविकता को जान ले कि इस संसार का केवल एक ईश्वर है। उसी ने संपूर्ण सृष्टि को बनाया है। वह मृत्यु के पश्चात सभी इंसानों को इकट्ठा करके उनसे हिसाब लेगा और फिर हर एक को उसके कार्य के अनुसार या तो सदैव के लिए स्वर्ग में भेज देगा या सदैव के लिए नरक में। यह वास्तविकता इतनी गंभीर है कि अगर वह वास्तव में किसी के मन-मस्तिष्क में उतर जाए तो उसका जीवन कुछ-से-कुछ हो जाता है। वह इन सारी चीज़ों के बारे में बहुत ही संवेदनशील हो जाता है, जो इंसान को नरक की आग में पहुँचाने वाली हैं और उन सारी चीज़ों के प्रति वह बहुत ही उत्सुक हो जाता है, जो इंसान को स्वर्ग के बाग़ों का पात्र बनाने वाली हैं। वह हर चीज़ से अधिक ईश्वर से डरने लगता है और हर चीज़ से अधिक ईश्वर से प्रेम करने लगता है। वह अपनी निजी हस्ती को ईश्वर की महानतम हस्ती में खो देता है।

ईश्वर और परलोक के बारे में उसकी बढ़ी हुई संवेदनशीलता उसे बंदों के बारे में भी बहुत ही सावधान और ज़िम्मेदार बना देती है। एक इंसान का बुरा करते हुए उसे ऐसा अनुभव होता है, जैसे वह अपने आपको नरक के गड्ढे में गिरा रहा है। लोगों के साथ घमंड भरा व्यवहार करते हुए वह इस प्रकार डरने लगता है, जैसे कि हर इंसान अपने साथ नरक के फ़रिश्तों की फौज लिये हुए है। अपने साथ अच्छा व्यवहार करने वाले लोगों के साथ अन्याय करना उसे ऐसा लगता है, जैसे उसने अपने आपको नरक की गहरी गुफ़ा में धकेल दिया है। अब कोई इंसान उसकी दृष्टि में केवल एक इंसान नहीं होता, बल्कि हर इंसान एक ऐसा अस्तित्व होता है जिसके साथ ईश्वर अपने सभी फ़रिश्तों के साथ खड़ा हुआ हो।

आत्म-निरीक्षण

घास को जानना और इसे अपने अंदर से निकालकर फेंकना बहुत आवश्यक है, वरना इंसान का परिणाम वही होगा, जो बिना निराई किए हुए खेत का होता है।

खेत में जब फ़सल बोई जाती है तो फ़सल के साथ तरह-तरह की घास-फूस भी उग जाती है। गेहूँ के हर पौधे के साथ खरपतवार नामक घास भी निकलती है और सरसों के हर पेड़ के साथ एक निकम्मा पौधा भी बढ़ना शुरू होता है। यह अपने आप निकलने वाली घास-फूस फ़सल को बहुत हानि पहुँचाती है, वह खेत के पानी और खाद में हिस्सेदार बन जाती है। वह असली फ़सल को पूरी तरह से बढ़ने नहीं देती।

किसान अगर इन खरपतवारों को बढ़ने के लिए छोड़ दे तो वह सारी फ़सल को ख़राब कर दें। खेत में दाना डालकर किसान ने जो उम्मीदें लगाई हैं, वह कभी पूरी न हों। इसलिए किसान यह करता है कि वह खेत में निराई (Weeding) का कार्य करता है। वह एक-एक खरपतवार निकालता है कि खेत को उनसे साफ़ कर दे और फ़सल को बढ़ने का पूरा मौक़ा मिले। हर किसान जानता है कि खेत में दाना डालना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि इसके साथ यह भी आवश्यक है कि फ़सल के साथ उगने वाली दूसरी हानि पहुँचाने वाली घासों को चुन-चुनकर निकाल दिया जाए, वरना खेत से मनचाही फ़सल प्राप्त नहीं हो सकती।

यह निराई का कार्य जो खेत में किया जाता है, यह इंसानी जीवन में भी आवश्यक है और इसका इस्लामी नाम मुहासिबा (आत्मनिरीक्षण) है।

इंसान का मामला भी यही है कि उसे जब कोई अच्छी चीज़ प्राप्त होती है तो इसी के साथ एक 'निकम्मी घास' भी उसके अंदर से उगनी शुरू होती है। इस निकम्मी घास को जानना और इसे अपने अंदर से निकालकर फेंकना बहुत आवश्यक है, वरना इंसान का परिणाम वही होगा, जो बिना निराई किए हुए खेत का होता है।

किसी को साधन आौर सुविधा हाथ आ जाए तो उसके अंदर अनुचित आत्मविश्वास की भावना उभरती है। सत्ता मिल जाए तो घमंड पैदा होता है। इसी तरह दौलत के साथ कंजूसी, ज्ञान के साथ गर्व, लोकप्रियता के साथ पाखंड और सामाजिक सम्मान के साथ प्रदर्शन की मानसिकता पैदा हो जाती है। यह सारी चीज़ें खरपतवार घास हैं, जो किसी इंसान के गुणों को खा जाने वाली हैं।

हर इंसान को चाहिए कि वह इस दृष्टि से अपना निरीक्षक बन जाए और जब भी अपने अंदर कोई 'निकम्मी घास' उगते हुए देखे तो उसे उखाड़कर फेंक दे। जो आदमी अपने ऊपर निरीक्षण का कार्य नहीं करेगा, तो वह निश्चित रूप से इस संसार में बरबाद हो जाएगा। वह ऐसा खेत होगा, जिसकी फ़सल तबाह हो गई और वह ऐसा बाग़ होगा, जिसकी सारी बहारें पतझड़ में बदल गईं।

दोनों एक स्तर पर

एक आदमी नाम व प्रसिद्धि के लिए धर्म की पताका उठाने वाला बने, दूसरा आदमी नाम व प्रसिद्धि के लिए नेतागिरी करे तो धार्मिक आदमी का परिणाम भी वही होगा, जो स्वार्थी नेताओं का ईश्वर के यहाँ होने वाला है।

31 मार्च, 1981 को सभी अख़बारों की पहली सुर्ख़ी थी— 'अमेरिका के राष्ट्रपति पर जानलेवा हमला'। एक नवयुवक ने ऑटोमेटिक गन से राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन पर हमला किया और दो सेकंड में छः फायर किए। एक गोली राष्ट्रपति के सीने को छेदकर उनके फेफड़े में जा लगी। अस्पताल तक पहुँचते-पहुँचते उनके शरीर का आधा ख़ून बह चुका था, लेकिन तत्काल चिकित्सा सहायता प्रभावी सिद्ध हुई और रोनाल्ड रीगन की जान बच गई।

इससे पहले रोनाल्ड रीगन एक फ़िल्म अभिनेता थे। फ़िल्मी संसार में वह कोई विशेष स्थान प्राप्त न कर सके। इसके बाद उन्होंने राजनीति में भाग लेना शुरू किया और अंततः उन्हें 1980 के चुनाव में अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। गोली लगने के बाद राष्ट्रपति रीगन ने वाशिंगटन के अस्पताल में डॉक्टरों और नर्सों से बात करते हुए कहा—

"If I'd got this much attention in Hollywood,
I would never have left."

"अगर मैं हॉलीवुड (फ़िल्मी संसार) में इतने अधिक आकर्षण का केंद्र बना होता तो मैं फ़िल्मी संसार को कभी न छोड़ता।"

(हिंदुस्तान टाइम्स; 1 अप्रैल, 1981)

दूसरी ओर नवयुवक हमलावर जॉन हिंकले की कहानी के बारे में आया है कि उसे फ़िल्म अभिनेत्री जोडी फॉस्टर से प्रेम हो गया था। वह उसे पत्र लिखता रहा, लेकिन मिस फॉस्टर ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अंततः उसने हमले से एक दिन पहले कथित अभिनेत्री को पत्र लिखा, जिसमें यह वाक्य लिखा था—

"Now you'll Know who I am."

"अब तुम जान लोगी कि मैं कौन हूँ।"

(H.T. 2-4,1981)

इस पत्र के अगले दिन उसने अमेरिकी राष्ट्रपति पर जानलेवा हमला किया। इसके बाद एक गुमनाम नवयुवक अचानक सारे संसार के अख़बारों की बड़ी सुर्ख़ी बना हुआ था। रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में उसने पहला स्थान प्राप्त किया। केवल एक बंदूक़ का ट्रिगर दबाकर उसने वह प्रसिद्धि प्राप्त कर ली, जो बहुत सारे लोगों को सारी उम्र काम करने के बाद भी नहीं मिलती।

एक आदमी प्रत्यक्ष में अपराधी हो और दूसरा प्रत्यक्ष में निरपराध, लेकिन दोनों प्रसिद्धि के इच्छुक हों तो इसका अर्थ यह है कि दोनों का जीवन जीने का स्तर एक है। संसार का क़ानून लोगों से उनके प्रत्यक्ष की दृष्टि से मामला करता है। परलोक वह स्थान है, जहाँ लोगों से उनके अंतस की दृष्टि से मामला किया जाएगा। एक आदमी नाम व प्रसिद्धि के लिए धर्म की पताका उठाने वाला बने, दूसरा आदमी नाम व प्रसिद्धि के लिए नेतागिरी करे तो धार्मिक आदमी का परिणाम भी वही होगा, जो स्वार्थी नेताओं का ईश्वर के यहाँ होने वाला है।

केवल 'करना' पर्याप्त नहीं

अगर इंसान प्रत्यक्ष गतिविधियाँ दिखा रहा हो और उसका अपना अस्तित्व कुछ पाने से वंचित हो तो उसकी गतिविधियों की कोई वास्तविकता नहीं।

बाल्टी के पेंदे में छेद हो और ऊपर से आप इसमें पानी डालें तो सारा पानी बहकर निकलता रहेगा और बाल्टी के अपने हिस्से में कुछ नहीं आएगा। ऐसा ही मामला इंसान का भी है। इंसान का वही कर्म वास्तविक कर्म है, जो स्वयं उसे कुछ दे रहा हो। अगर इंसान प्रत्यक्ष गतिविधियाँ दिखा रहा हो और उसका अपना अस्तित्व कुछ पाने से वंचित हो तो उसकी गतिविधियों की कोई वास्तविकता नहीं।

कर्म वही कर्म है, जिसके दौरान इंसान के मस्तिष्क में विवेक की चिंगारी पैदा हो। उसके हृदय में तपन व तड़प का लावा उबले। उसकी आत्मा के अंदर अवस्थाओं की हलचल पैदा हो। उसके जीवन में कोई ऐसी घटना घटे, जो उचित वास्तविकताओं की कोई खिड़की उसके अंदर खोल दे। यही प्राप्ति किसी काम की सफलता की असल कसौटी है। वही कर्म, कर्म है, जो इंसान को इस प्रकार के उपहार दे रहा हो। जिस कर्म से इंसान को यह चीज़ें न मिलें तो वह ऐसा ही है, जैसे छेद वाली बाल्टी में पानी गिराना।

देखने की चीज़ यह नहीं है कि आप क्या कर रहे हैं, देखने की चीज़ यह है कि आप क्या हो रहे हैं। अगर आपकी व्यस्तताएँ बहुत बढ़ी हुई हों, अगर बताने के लिए आपके पास बहुत से कारनामे हों, लेकिन आपका भीतरी व्यक्तित्व ख़ाली हो, आप स्वयं कुछ न हो रहे हों तो आपकी व्यस्तताएँ केवल अलाभकारी गतिविधियाँ हैं, इसके अलावा और कुछ नहीं। हवाएँ हों, लेकिन उनसे ऑक्सीजन न मिले। पानी हो, लेकिन उससे प्यास न बुझे।

भोजन हो, लेकिन उससे इंसान को शक्ति न मिले। सूरज हो, लेकिन वह रोशनी न दे रहा हो तो ऐसा होना, होना नहीं है, बल्कि न होने की निम्नतर स्थिति है। इसी प्रकार जो व्यवहार इंसान की अपनी ख़ुराक बन रहा हो, वह व्यवहार नहीं; बल्कि इससे भी अधिक अर्थहीन कोई चीज़ है।

पत्थर के ऊपर आप पानी डालें तो प्रत्यक्ष में वह पानी से भीग जाएगा। उसके चारों ओर पानी-ही-पानी नज़र आएगा, लेकिन पत्थर पानी के स्वाद और तरावट को नहीं जानता। उसने पानी की इस दूसरी हैसियत का अनुभव नहीं किया। इसके विपरीत एक जीवित इंसान जब प्यास के समय पानी पीता है तो उसकी नाड़ियाँ (Blood vessels) नम हो जाती हैं। वह पानी की वास्तविकता का एक 'भीतरी अनुभव' करता है। इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि करना क्या है और होना क्या है।

करना यह है कि इंसान कुछ निर्धारित कार्यों को बस रस्मी तौर पर दोहरा ले। इंसान की ज़ुबान कुछ शब्द बोले, लेकिन वह शब्द उसके हृदय की धड़कन न बन रहे हों। इंसान अपने हाथ-पाँव से कुछ व्यवहार करे, लेकिन उसका व्यवहार उसकी आत्मा को न छुए। उसकी गतिविधियाँ उसके मन-मस्तिष्क में हलचल न पैदा करें। इसके विपरीत होना यह है कि इंसान का व्यवहार उसके लिए आध्यात्मिक अनुभव बन रहा हो। उसके भीतरी व्यक्तित्व को बार-बार आनंद की ख़ुराक मिल रही हो। उसका शारीरिक व्यवहार उसके अशारीरिक अस्तित्व में हलचल पैदा कर रहा हो। वही करना, करना है जिसके बीच इंसान स्वयं भी कुछ हो रहा हो।

जो करना, होना न बने, वास्तविकता की दृष्टि से उसका कोई मूल्य नहीं। वह मानो एक ऐसा पत्थर है, जो प्रत्यक्ष में पानी से भीग रहा है, लेकिन पानी का स्वाद नहीं पाता है।

स्वीकार्य बंदे

वह कौन सौभाग्यशाली लोग हैं, जो परलोक में ईश्वर के प्रिय बंदे होंगे। यह वह लोग हैं, जो अपने सेल्फ (स्वयं) के ख़ोल को तोड़कर ईश्वर के सेल्फ़ में गुम हो जाने पर सहमत हो गए।

शरीर में अगर ऐसा रक्त डाला जाए, जो आदमी के रक्त समूह का न हो तो शरीर उसे स्वीकार नहीं करता। उसके अंदर तुरंत शरीर में प्रतिरोधक उत्पन्न हो जाते हैं और वह रक्त बाहर निकाल दिया जाता है। इसी प्रकार जले व कटे हुए शरीर के हिस्से पर निरोपण (Grafting) होता है, जिसकी सुरक्षित स्थिति यह है कि स्वयं अपने शरीर की त्वचा लेकर क्षतिग्रस्त स्थान पर लगा दी जाए, जिसको स्वनिरोपण कहते हैं।

अब अगर किसी स्थान पर त्वचा का निरोपण करना है और वहाँ किसी असंबद्ध शरीर की त्वचा लेकर लगा दी गई हो तो वह कुछ दिन ठीक रहेगी, लेकिन एक हफ़्ते के अंदर शरीर इसके अनजानेपन को पहचान लेगा। रक्त का प्रवाह इस स्थान पर रुक जाएगा और अंततः त्वचा का वह टुकड़ा अलग होकर गिर जाएगा। इसका वर्णन करते हुए प्रोफ़ेसर विलियम बॉइड ने अपनी पैथोलॉजी की किताब में लिखा है कि अपनापन परायेपन को स्वीकार नहीं करता।

Self will not accept non-self.

यह छोटे सेल्फ़ (इंसान) के स्वाभिमान का उदाहरण है। इसी पर बड़े सेल्फ़ (ईश्वर) के सम्मान और स्वाभिमान का अनुभव किया जा सकता है। वास्तविकता यह है कि ईश्वर सभी स्वाभिमानियों से अधिक स्वाभिमानी और सभी अद्वितीयवादियों (Unparalleled) से अधिक अद्वितीयवादी है।

ईश्वर किसी भी स्थिति में किसी भी प्रकार से अनेकेश्वरवाद सहन नहीं कर सकता। वह हर दूसरी ग़लती को माफ़ कर देगा, लेकिन अनेकेश्वरवाद को कभी माफ़ नहीं करेगा।

वह कौन सौभाग्यशाली लोग हैं, जो परलोक में ईश्वर के प्रिय बंदे होंगे। यह वह लोग हैं, जो अपने सेल्फ (स्वयं) के ख़ोल को तोड़कर ईश्वर के सेल्फ़ में गुम हो जाने पर सहमत हो गए, जो अपनी या किसी दूसरे की अद्वितीयता को भुलाकर ईश्वर की अद्वितीयता के आगे झुक गए, जिन्होंने हर तरह के अनेकेश्वरवाद को छोड़कर शुद्ध एकेश्वरवाद को धारण कर लिया।

इंसान के लिए हालाँकि यह बड़ा कठिन कार्य है कि वह अपने अलावा किसी दूसरे को स्वीकार करे। जब भी कोई आदमी किसी दूसरे को मानता हुआ नज़र आए तो वह या तो डर के आधार पर होगा या किसी युक्ति के आधार पर। फिर भी यही वह देना है, जो कोई इंसान कभी किसी को नहीं देता। इसी की माँग इंसान के रचयिता ने इंसान से की है और इसी का नाम इस्लाम है।

मुस्लिम वही है, जो अपने स्व की संपत्ति अपने रचयिता को देने पर सहमत हो जाए। जो अपने आपको पूरी तरह ईश्वर को सौंप दे। जो हर दृष्टि से ईश्वर के आदेश के अधीन बन जाए।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह इंसान के लिए असहनीय को सहन करना है, लेकिन इसी को ईश्वर ने अपने स्वर्ग का मूल्य बना दिया है। स्वर्ग की अनोखी कृपा उसी भाग्यशाली के हिस्से में आएगी, जो इस अनोखे अनुदान के रूप में इसका मूल्य प्रस्तुत कर दे।

धैर्य का प्रतिफल

जो ईश्वर की ख़ातिर सहन कर ले तो उसका यह व्यवहार कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। जो चीज़ वह इंसानों से न पा सका, उसे वह ईश्वर से पाकर रहेगा।

क़ुरआन में सब्र यानी धैर्य को बहुत ज़ोर देकर बताया गया है। यह कहा गया है कि अगर कोई आदमी तुम्हारे साथ मनमानी करे और तुम धैर्य न कर सको तो उसके साथ तुम उतना ही कर सकते हो, जितना उसने तुम्हारे साथ किया है, लेकिन यह केवल निपटने की बात है, वरना ऊँचा दर्जा तो यह है कि तुम माफ़ कर दो और बदला लेने की जगह सुधार की शैली अपनाओ। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारी भलाई का बदला ईश्वर के ज़िम्मे हो जाएगा और तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।

(क़ुरआन, सूरह अश-शूरा, 42:40)

सांसारिक जीवन में बार-बार ऐसा होता है कि एक आदमी को दूसरे आदमी से कष्ट पहुँचता है। कभी एक आदमी दूसरे आदमी को एक वचन देता है, लेकिन बाद में उसको पूरा नहीं करता। कभी कोई आदमी अपने आपको शक्तिशाली देखकर निर्बल के साथ अन्याय करता है। कभी कोई आदमी संदेह के आधार पर दूसरे आदमी को मिटाने और बरबाद करने पर उतारू हो जाता है। कभी कोई आदमी अवसर का लाभ उठाता है और अपने साथी को उसका उचित अधिकार देने पर तैयार नहीं होता। कभी किसी की उन्नति देखकर आदमी के अंदर ईर्ष्या पैदा होती है और वह नाहक़ ही अपने भाई की बरबादी के लिए तैयार हो जाता है।

अब अधिकतर ऐसा होता है कि जो आदमी पीड़ित है, उसके हृदय में अत्याचारी के विरुद्ध आग भड़क उठती है। वह उसके अत्याचारों को भूलने

और उसे माफ़ करने के लिए तैयार नहीं होता। इसमें संदेह नहीं कि ऐसे अवसर पर हृदय के घाव को भुला देना बहुत ही कठिन कार्य है, लेकिन अगर आदमी ऐसा करे कि मामले को ईश्वर के ऊपर डाल दे, वह ईश्वर की ख़ातिर उसे सहन कर ले तो उसका यह व्यवहार कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। जो चीज़ वह इंसानों से न पा सका, उसे वह ईश्वर से पाकर रहेगा।

एक आदमी जब किसी को वचन देता है तो मानो वह उसे एक बैंक का चेक दे रहा है, जो समय आने पर कैश किया जा सके, लेकिन जब समय आने पर वह अपने वचन को पूरा नहीं करता है तो जैसे उसने काग़ज़ी चेक तो लिख दिया, लेकिन जब खाते से उसकी धनराशि लेने का समय आया तो उसने भुगतान से इनकार कर दिया। ऐसा अनुभव इंसान के लिए कड़वा अनुभव है, लेकिन अगर वह धैर्य रखे तो यह ईश्वर का वादा है कि वह अपनी ओर से उसका बदला देगा। जो चेक इंसानी बैंक में कैश न हो सका, वह ईश्वरीय बैंक में कैश होगा, चाहे इस लोक में हो या परलोक में।

अंतरात्मा के विरुद्ध

इंसान की सबसे बड़ी हानि यह है कि वह अपनी अंतरात्मा का साथ न दे सके। ज़िद और पक्षपात में डूबकर वह एक ऐसी दिशा में चलने लगे, जिसके बारे में उसकी अंतरात्मा आवाज़ दे रही हो कि वह सही दिशा नहीं।

प्रसिद्ध अंग्रेज़ इतिहासकार आर्नोल्ड टॉयनबी (1889-1975) ने अपने जीवन के अंतिम दौर में एक बार कहा कि फ़िलिस्तीन पर यहूदियों का ऐतिहासिक रूप से अपना अधिकार जताना ऐसा ही है, जैसे रेड इंडियन क़बीले कनाडा की वापसी की माँग करें। यहूदियों नें नाज़ियों के अत्याचार पर असंख्य पुस्तकें लिखी हैं, लेकिन स्वयं यहूदी फ़िलिस्तीनी अरबों के साथ जो बर्बरतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं, वह बिल्कुल उसी प्रकार का है, जो नाज़ियों ने यहूदियों के साथ किया था।

टॉयनबी ने अपना यह बयान कनाडा में दिया था। उस समय कनाडा में इज़राइली सरकार के राजदूत मिस्टर हरजग थे। मिस्टर हरजग ने ब्रिटिश इतिहासकार को निमंत्रण दिया कि वह इस समस्या पर उससे बहस करें। आर्नोल्ड टॉयनबी ने इस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। इसके बाद मांट्रियल की मैकगिल यूनिवर्सिटी में एक आयोजन हुआ, जिसमें दोनों ने हिस्सा लिया। मिस्टर हरजग ने कहा, “जर्मन नाज़ियों ने साठ लाख यहूदियों को मार डाला था। इसकी तुलना में फ़िलिस्तीन में जो अरब बेघर हुए हैं, उनकी संख्या बहुत मामूली है। इन दोनों को एक जैसा कैसे कहा जा सकता है?”

आर्नोल्ड टॉयनबी ने उत्तर दिया कि मैंने जब नाज़ियों और इज़राइलियों के अत्याचारों को एक जैसा कहा था तो इससे मेरा अभिप्राय संख्या नहीं,

बल्कि अपराध की विशेष स्थिति थी। किसी इंसान के लिए सौ प्रतिशत से अधिक बुरा होना संभव नहीं। हत्यारा कहलाने के लिए एक आदमी की हत्या करना काफ़ी है। मैं हैरान हूँ कि आप लोग मेरे शब्दों पर क्यों इतना बौखला उठे हैं? मैंने वही बात कही है, जो तुममें से हर एक की अंतरात्मा कह रही है।

जब भी इंसान किसी सच्चाई से इनकार करता है तो सबसे पहले वह स्वयं अपना इनकार कर रहा होता है। सच्चाई हमेशा इंसान के अपने हृदय की आवाज़ होती है, लेकिन इंसान ज़िद, पक्षपात और अपनी झूठी प्रशंसा को बनाए रखने के लिए इसे नहीं मानता। वह अपने इनकार को सही सिद्ध करने के लिए ऐसे शब्द बोलता है, जिनके बारे में स्वयं उसका हृदय गवाही दे रहा होता है कि उनमें कोई वज़न नहीं।

इंसान की सबसे बड़ी हानि यह है कि वह अपनी अंतरात्मा का साथ न दे सके। ज़िद और पक्षपात में डूबकर वह एक ऐसी दिशा में चलने लगे, जिसके बारे में उसकी अंतरात्मा आवाज़ दे रही हो कि वह सही दिशा नहीं है यानी अपना खंडन स्वयं करना। यह अपने आपकी अपने हाथों से हत्या करना है। यह अपने अपराधी होने पर स्वयं गवाह बनना है।

कैसा विचित्र है यह खोना, लेकिन जब इंसान की संवेदनहीनता बढ़ जाती है तो वह अपने खोने की इन कार्यवाहियों को अपनी जीत समझता है। वह अपने आपको समाप्त कर रहा होता है, लेकिन समझता है कि मैं अपने आपको जीवन दे रहा हूँ।

ईश्वर का स्मरण

शांति के समय ईश्वर को भुलाए रखना और जब कष्ट आए तो ईश्वर की ओर दौड़ लगाना एक ऐसा व्यवहार है, जिसका ईश्वर के यहाँ कोई मूल्य नहीं।

प्रसिद्ध समाचार-पत्र हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक ने एक फील्ड स्टडी (15 मई, 1982) के द्वारा भारतीय लोगों का स्वभाव मालूम किया। वह अपने अध्ययन के बाद इस नतीजे पर पहुँचे कि भारतीयों की स्थिति यह है कि जब कोई कठिनाई आ पड़ती है तो ईश्वर उनके यहाँ सबसे ऊपर होता है। जब हर चीज़ ठीक हो तो पैसा सबसे ऊपर आ जाता है और ईश्वर को दूसरी श्रेणी में पहुँचा दिया जाता है।

When a catastrophe strikes, God is on top. When all is tranquil, money manages to push God to the second place.

यह बात न केवल भारतीयों के लिए सही है, बल्कि वह आम इंसानों के लिए भी बड़ी हद तक सही है। इंसान का हाल यह है कि कष्ट और विवशता के क्षणों में वह सबसे अधिक ईश्वर को याद करता है। उस समय उसका सारा ध्यान ईश्वर की ओर लग जाता है, लेकिन जब हालात अच्छे हों और कोई कष्ट सामने न हो तो वह अपने भौतिक स्वार्थों को अपने ध्यान का केंद्र बना लेता है, लेकिन इस प्रकार की ईश्वरभक्ति, ईश्वरभक्ति नहीं। वह केवल इंसान के उस अपराध को बताती है कि वह अपने रचयिता को भूला हुआ था।

वह समय जबकि उसे ईश्वर को याद करना चाहिए था, उस समय उसने ईश्वर को याद नहीं किया। यहाँ तक कि ईश्वर ने उसे उसकी वास्तविकता से परिचित करा दिया। उसकी आँख से भ्रम का पर्दा हट गया। जब ऐसा हुआ

तो वह घबराकर ईश्वर को पुकारने लगा।

इंसान एक स्वतंत्र और सशक्त रचना है। उससे स्वतंत्र ईश्वरभक्ति की ही अपेक्षा है, न कि विवशतापूर्ण ईश्वरभक्ति की। इंसान का याद करना वह याद करना है, जबकि उसने सुख-शांति के पलों में ईश्वर को याद किया हो। सुख-शांति के समय ईश्वर को भुलाए रखना और जब कष्ट आए तो ईश्वर की ओर दौड़ लगाना एक ऐसा व्यवहार है, जिसका ईश्वर के यहाँ कोई मूल्य नहीं। फिर यह घटना बताती है कि जो लोग धन-संपत्ति को सबसे बड़ा दर्जा दिए हुए हैं, वह झूठे पूज्यों को अपना पूज्य बनाए हुए हैं। जो चीज़ कठिनाई के समय इंसान का सहारा न बने, जिसको इंसान स्वयं संवेदनशील पलों में भूल जाए, वह किसी का पूज्य नहीं हो सकता।

जब पर्दा उठेगा

अचानक उसे अनुभव होगा कि वह सब कुछ केवल एक धोखा था,
जिसे उसने सबसे बड़ी वास्तविकता समझ लिया था।

अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन 30 मार्च, 1981 को विश्वासपूर्ण चेहरे के साथ अपने राष्ट्रपति भवन (व्हाइट हाउस) से निकले। कारों का क़ाफ़िला उन्हें लेकर वाशिंगटन के हिल्टन होटल की ओर रवाना हुआ। प्रोग्राम के अनुसार उन्होंने होटल के शानदार हॉल में एक भाषण दिया।

प्रशंसा और वाहवाही के वातावरण में उनका भाषण समाप्त हुआ। वे आदमियों की भीड़ में हँसते हुए चेहरे के साथ बाहर आए। वे अपनी बुलेट प्रूफ़ लिमोज़िन कार से कुछ क़दम की दूरी पर थे कि अचानक बाहर ख़ड़ी हुई भीड़ की ओर से गोलियों की आवाज़ आने लगी। एक नवयुवक जॉन

हिंकले ने दो सेकंड के अंदर छ: फायर किए। एक गोली मिस्टर रीगन के सीने में लगी। वे ख़ून से लथपथ हो गए और तुरंत अस्पताल पहुँचाए गए। अचानक गोली लगने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति का जो हाल हुआ, उसे ए० पी० कार पोर्टर ने इन शब्दों में बयान किया है—

"Mr. Reagan appeared stunned. The smile faded from his lips."

"मिस्टर रीगन जैसे सुन्न हो गए, मुस्कराहट उनके होंठों से ग़ायब हो गई।" (टाइम्स ऑफ़ इंडिया; 31 मार्च, 1981)

यह घटना इस स्थिति की एक तस्वीर है, जो मृत्यु के 'हमले' के समय अचानक इंसान पर छाएगी।

इंसान वर्तमान संसार में अपने को स्वतंत्र समझ रहा है। वह निडर होकर जो चाहे बोलता है और जो चाहे करता है। अगर किसी को कुछ माल हाथ आ गया है तो वह समझता है कि मेरा भविष्य सुरक्षित है। किसी को कोई सत्ता प्राप्त हो तो वह अपनी सत्ता का इस प्रकार प्रयोग करता है, जैसे उसकी सत्ता कभी छिनने वाली नहीं। हर इंसान विश्वास से भरा हुआ चेहरा लिये हुए है। हर इंसान हँसते हुए अपनी 'लिमोज़िन' की ओर बढ़ रहा है। इसके बाद अचानक पर्दा उठता है। मृत्यु का देवता उसे वर्तमान संसार से निकालकर अगले संसार में पहुँचा देता है।

यह हर इंसान के जीवन का एक बहुत ही डरावना पल है। जब यह पल आता है तो इंसान अपने अनुमान के बिल्कुल विपरीत परिस्थितियों को देखकर डर जाता है। अचानक उसे अनुभव होता है कि वह सब कुछ केवल एक धोखा था, जिसे उसने सबसे बड़ी वास्तविकता समझ लिया था। मैंने अपने आपको स्वतंत्र समझा था, लेकिन मैं तो बिल्कुल अधिकारहीन निकला। मैं अपने आपको धन-संपत्ति वाला पा रहा था, लेकिन मैं तो बिल्कुल ख़ाली हाथ था। मेरा विचार था कि मेरे पास शक्ति है, लेकिन मैं तो ईश्वर के इस संसार में मक्खी और मच्छर से भी अधिक

कमज़ोर था। मैं समझता था कि मेरे साथ बहुत सारे लोग हैं, लेकिन यहाँ तो मेरा कोई भी नहीं।

आह! वह इंसान जो इसी बात को नहीं जानता, जिसको उसे सबसे अधिक जानना चाहिए।

हर तरफ़ फ़रेब

फ़रेब का कारोबार भी केवल उस समय तक है, जब तक ईश्वर प्रकट होकर अपने न्याय का तराज़ू खड़ा न कर दे।

आज का संसार फ़रेब का संसार है। आज के इंसान को ऐसे नारे मिल गए हैं, जिनसे वह अपनी निजी लूट की राजनीति को जन-सेवा की राजनीति प्रकट कर सके। हर इंसान ऐसे शब्दों का माहिर बना हुआ है, जो उसके अत्याचारों और लड़ाई-झगड़ों को बिल्कुल सच और न्याय का रूप दे सके। हर इंसान के हाथ में ऐसे क़ानूनी बिंदु आ गए हैं, जो उसके अपराध को बेगुनाही का सर्टीफ़िकेट प्रदान कर दें। यह सांसारिक लोगों का हाल है, लेकिन धार्मिक लोगों का मामला भी इससे कुछ अलग नहीं। यहाँ भी लोगों ने ऐसे फ़ज़ाइल व मसाइल[17] का भंडार जमा कर रखा है, जो उनकी अधार्मिकता को धार्मिक कमाल के ख़ाने में डाल दें। जो उनकी कर्महीनता को कर्म का उत्तम श्रेय दे दे।

लोगों ने ऐसा ईश्वर खोजा हुआ है, जिससे डरने की कोई आवश्यकता

[17] फ़ज़ाइल : अच्छाइयाँ, ख़ूबियाँ, गुण।
मसाइल : इस्लामी धर्मशास्त्र संबंधी आदेश, पेचीदे मामले, समस्याएँ।

नहीं। लोगों को ऐसा पैग़ंबर हाथ आ गया है, जो केवल इसलिए आया था कि उनके सारे बुरे कर्मों के पश्चात भी ईश्वर के यहाँ उनका यक़ीनी सिफ़ारिशी बन जाए। लोगों को ऐसा परलोक मिल गया है, जहाँ स्वर्ग केवल अपने लिए है और नरक केवल दूसरों के लिए। लोगों को ऐसी नमाज़ें प्राप्त हो गई हैं, जिनके साथ अहंकार और ईर्ष्या जमा हो सकती है। लोगों को ऐसे रोज़े (व्रत) मालूम हो गए हैं, जो झूठ और अत्याचार से दूषित नहीं होते। लोगों को ऐसा धर्म मिल गया है, जो केवल वाद-विवाद करने के लिए है, न कि उस पर चलने के लिए।

लोगों को इस्लामी दावत के ऐसे नुस्ख़े मालूम हो गए हैं, जो उनके व्यक्तिगत नेतृत्व और राष्ट्रीय राजनीति को इस्लाम की पोशाक ओढ़ा दें, लेकिन झूठा सोना उसी समय तक सोना है, जब तक वह कसौटी पर न कसा गया हो। इसी तरह फ़रेब का कारोबार भी केवल उस समय तक है, जब तक ईश्वर प्रकट होकर अपने न्याय का तराज़ू खड़ा न कर दे।

आज परीक्षा की स्वतंत्रता है। आज इंसान के पास मौक़ा है कि जो चाहे करे, लेकिन जब परीक्षा का समय समाप्त होगा तो इंसान अपने आपको बिल्कुल लाचार पाएगा। वह बोलना चाहेगा, लेकिन उसके पास शब्द न होंगे कि वह बोल सके। वह चलना चाहेगा, लेकिन उसके पास पाँव न होंगे कि उनके द्वारा वह भागकर कहीं जा सके।

यह सच्चाई का दिन होगा। इस दिन हर इंसान के ऊपर से फ़रेब की वह पोशाक उतर चुकी होगी, जिसे आज वह पहने हुए है। हर इंसान अपने वास्तविक रूप में सामने होगा, जो सच में उसका है, लेकिन परीक्षा की स्वतंत्रता से लाभ उठाकर आज वह उसे छिपाए हुए है। इंसान का यह वास्तविक रूप ईश्वर के सामने आज भी नग्न है, लेकिन परलोक के संसार में वह सब लोगों के सामने स्पष्ट हो जाएगा।

जानवर से निकृष्ट

ईश्वर ने इंसान को श्रेष्ठ संरचना के साथ पैदा किया है, लेकिन इंसान अपनी नादानी से स्वयं को सबसे निम्न श्रेणी के गर्त में गिरा लेता है।

शेख़ सादी ने कहा था, "मैं ख़ुदा से डरता हूँ और उसके बाद उस आदमी से डरता हूँ, जो ख़ुदा से नहीं डरता।" बस इसी बात को शेक्सपियर ने एक दूसरे ढंग से इस प्रकार कहा है, "इंसान ही एक ऐसा जानवर है, जिससे मैं कायर की तरह डरता हूँ।"

इस संसार में हर चीज़ भविष्यवाणी योग्य भूमिका रखती है। आग के बारे में आप पहले से ही अनुमान कर सकते हैं कि अगर आपने उसके अंदर हाथ डाला तो वह आपको जला देगी। अगर आप अपने हाथ को इससे दूर रखें तो वह ऐसा नहीं करेगी कि वह कूदकर आपके हाथ पर आ गिरे। यही मामला सभी चीज़ों का है। यहाँ तक कि कष्टदायी जानवरों के विषय में भी हमें पहले से मालूम है कि वे एकतरफ़ा तौर पर किसी के ऊपर हमला नहीं करते। उनका हमला हमेशा बचाव का होता है, न कि अकारण।

इसका अर्थ यह है कि संसार की हर चीज़ एक लगे-बँधे नियम के अंतर्गत कार्य कर रही है और इस नियम का आदर करके आप इसके नुक़सान से बच सकते हैं, लेकिन इंसान ही एक ऐसा प्राणी है जिसके व्यवहार का कोई नियम और क़ानून नहीं। वह पूरी तरह स्वतंत्र है और वह जिस समय जो चाहे कर सकता है।

इस संसार में इंसान ही एक ऐसा अस्तित्व है, जो एकतरफ़ा तौर पर दूसरे के विरुद्ध कार्यवाही करता है, जो किसी वास्तविक कारण के बिना दूसरे के ऊपर हमला करता है। इंसान के लोभ और प्रतिशोध की कोई सीमा

नहीं। आप शांति के साथ अपने कार्य में व्यस्त हों और केवल अपनी निजी मेहनत की बुनियाद पर उन्नति करें, तब भी आप सुरक्षित नहीं, क्योंकि दूसरों के अंदर ईर्ष्या की भावना पैदा होगी और वह आपको गिराने के लिए उठ खड़े होंगे। इंसान असीमित रूप से अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहता है और अनंत सीमा तक दूसरे को बरबाद करके उसकी बरबादी का तमाशा देखना चाहता है।

कोई निकृष्ट कष्टदायी जानवर भी यह नहीं जानता कि वह किसी को बेइज़्ज़त करने की योजना बनाए। वह किसी को नीचा दिखाकर अपने घमंड की संतुष्टि का सामान इकट्ठा करे। किसी को अकारण ही कठिनाइयों में फँसाकर उसकी परेशानी का तमाशा देखे। यह केवल इंसान है, जो ऐसा करता है। ईश्वर ने इंसान को 'अह्सने तक़वीम' यानी 'श्रेष्ठ संरचना' के साथ पैदा किया है, लेकिन इंसान अपनी नादानी से स्वयं को 'असफ़ला साफ़िलीन' यानी 'सबसे निम्न श्रेणी' के गर्त में गिरा लेता है।

परीक्षा-स्थल

ईश्वर चाहता है कि इंसान अपने आप पर ईश्वर का शासन स्थापित करने वाला बने और लोग किसी दूसरे इंसान के विरुद्ध उखेड़-पछाड़ करके ईश्वर की हुकूमत की स्थापना कर श्रेय लेने में व्यस्त हैं।

कॉलेज में परीक्षा हो रही थी। एक विद्यार्थी ने कमरे में प्रवेश किया, लेकिन उसने परीक्षा-कॉपी पर कुछ नहीं लिखा। वह बस बैठा हुआ सिगरेट पीता रहा और तीन घंटे बिताकर बाहर चला आया। इसके बाद वह लाइब्रेरी पहुँचा और वहाँ किताबों के बीच बैठकर पर्चा हल करना शुरू कर दिया।

परीक्षा-कक्ष में उसने अपनी कॉपी बिल्कुल ख़ाली छोड़ दी थी, लेकिन लाइब्रेरी में उसने अपनी कॉपी भर डाली।

आप कहेंगे कि यह काल्पनिक कहानी है। कोई विद्यार्थी इतना मूर्ख नहीं हो सकता कि परीक्षा-कक्ष में पर्चा हल न करे और पुस्तकालय में बैठकर कॉपी भरने लगे और अगर यह घटना सच हो तो निश्चित ही वह कोई ऐसा विद्यार्थी होगा, जिसका दिमाग़ सही न हो।

यह सही है कि इस तरह की हरकत कोई मूर्ख विद्यार्थी ही कर सकता है, लेकिन संसार की परीक्षा के मामले में जो बात लोगों को इतनी विचित्र प्रतीत होती है, परलोक के मामले में हर इंसान इसी तरीक़े पर चल रहा है। कॉलेज के ज़िम्मेदार विद्यार्थियों की परीक्षा जहाँ लेना चाहते हैं, वह परीक्षा-कक्ष है, न कि लाइब्रेरी। इसी तरह ईश्वर की भी परीक्षा लेने की जगह है, लेकिन लोगों का हाल यह है कि ईश्वर ने परीक्षा के लिए जो जगह निर्धारित की है, वहाँ लोग परीक्षा में पूरा उतरने का प्रयास नहीं करते। इसके बजाय वे दूसरी जगहों पर ईश्वरभक्ति और धार्मिकता का कमाल दिखा रहे हैं।

ईश्वर इंसान के ईमान का प्रमाण अपने प्रति हार्दिक प्रेम में देखना चाहता है और लोग अपने ईमान का प्रमाण ईमान के कलिमा (श्लोक) के उच्चारण से दे रहे हैं। ईश्वर इंसान की भक्ति को अपने भय की कसौटी पर जाँच रहा है और लोग धार्मिक क्रिया (Rituals) की बाध्यता में अपनी भक्ति का प्रमाण एकत्र कर रहे हैं। ईश्वर लोगों के धर्म को चरित्र और व्यवहारों के स्तर पर जाँच रहा है और लोग वैकल्पिक नमाज़ द्वारा अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं।

ईश्वर चाहता है कि इंसान अपने आप पर ईश्वर का शासन स्थापित करने वाला बने और लोग किसी दूसरे इंसान के विरुद्ध उखेड़-पछाड़ करके ईश्वर की हुकूमत की स्थापना कर श्रेय लेने में व्यस्त हैं। ईश्वर किसी इंसान को जहाँ पीड़ितों का समर्थन करने वाला देखना चाहता है, वहाँ लोगों का हाल यह है कि वे अत्याचार व दंगों की सामूहिक घटनाओं पर केवल भाषणबाज़ी

करके अपने को पीड़ितों का समर्थक सिद्ध करने में लगे हुए हैं।

हर इंसान जानता है कि किसी विद्यार्थी की वह कॉपी बिल्कुल बेकार है, जो परीक्षा-कक्ष के बजाय लाइब्रेरी में बैठकर भरी गई हो। काश! लोग जानते कि ठीक इसी तरह वह कार्य भी बेकार है, जो ईश्वर के निर्धारित स्थान के अतिरिक्त कहीं और किया गया है।

कर्म के बिना

आज संसार की सबसे बड़ी समस्या यह है कि शब्दों के स्तर पर इंसान बड़े-बड़े शब्द बोल रहा है, लेकिन अपने शब्दों का व्यावहारिक मूल्य देने के लिए कोई भी इंसान तैयार नहीं।

आज काग़ज़ इतनी अधिक मात्रा में है कि जहाँ भी देखो, काग़ज़ का एक टुकड़ा पड़ा हुआ मिलेगा, लेकिन इन काग़ज़ों के टुकड़ों का कोई मूल्य नहीं। नोट भी काग़ज़ का एक टुकड़ा ही है, लेकिन इसका मूल्य इतना वास्तविक है कि कोई भी इंसान इस पर संदेह नहीं करता। इस अंतर का कारण यह है कि आम काग़ज़ी टुकड़े की किसी ने ज़मानत (Guarantee) नहीं ली है, जबकि नोट के पीछे सरकारी बैंक की ज़मानत है। हर नोट पर सरकारी बैंक की यह ज़मानत छपी होती है कि इसे प्रस्तुत करने वाले को वह धनराशि का पूरा भुगतान कर देगा, जो इस पर छपी हुई है। यही वह ज़मानत है, जिसने नोट के काग़ज़ को लोगों के लिए मूल्यवान बना दिया है। यही मामला शब्दों का भी है।

यह एक वास्तविकता है कि आज जितने भी शब्द बोले जा रहे हैं, इतिहास के किसी भी दौर में इतने शब्द नहीं बोले गए, लेकिन इन शब्दों का

कोई मूल्य नहीं, क्योंकि इनके पीछे अटल इरादे की ज़मानत शामिल नहीं है। आपसे एक आदमी वादा करता है कि वह आपका अमुक कार्य कर देगा, लेकिन जब आप निर्धारित समय पर उसकी हिमायत (Intercession) माँगते हैं तो वह बहाना कर देता है। आप उस आदमी के पास जो चीज़ लेकर गए, वह उसके बोले हुए शब्द थे। जब उसने अपना वादा पूरा नहीं किया तो जैसे उसने अपने शब्दों का मूल्य नहीं चुकाया। उसने शब्दों का काग़ज़ तो दे दिया, लेकिन जो कर्म उस काग़ज़ का मूल्य था, उसे देने के लिए वह तैयार न हुआ। उसके बोले हुए शब्द रद्दी काग़ज़ के टुकड़े थे, न कि बैंक का जारी किया हुआ नोट।

आज संसार की सबसे बड़ी समस्या यह है कि शब्दों के स्तर पर इंसान बड़े-बड़े शब्द बोल रहा है, लेकिन अपने शब्दों का व्यावहारिक मूल्य देने के लिए कोई भी इंसान तैयार नहीं। परिणाम यह है कि लोगों के बोले हुए शब्द उसी तरह रद्दी के टुकड़े बनकर रह गए हैं, जैसे टुकड़े गली-कूचों में हर समय पड़े रहते हैं और इंसान उनको बेकार समझकर नज़रअंदाज़ कर देता है। एक आदमी पीड़ितों के समर्थन में भाषणों और प्रस्तावों के ढेर लगा रहा है, लेकिन जब एक निकटतम आदमी उसका दरवाज़ा खटखटाता है और उससे कहता है कि मुझ पर हो रहे अत्याचार पर मेरी सहायता करो तो वह उसे बर्फ़ की तरह बिल्कुल ठंडा पाता है।

इससे यह सिद्ध होता है कि इंसान जैसे शब्द बोल रहा था, उसके पीछे उसका वास्तविक संकल्प शामिल न था। वह केवल ज़ुबानी शब्द थे, न कि कोई वास्तविक निर्णय। एक आदमी लोगों के सामने सज्जनता और श्रद्धा की तस्वीर बना रहता है, लेकिन जब उसके अहं पर चोट लगती है तो अचानक वह ईर्ष्या और घमंड का प्रदर्शन करने लगता है। इससे पता चलता है कि उसकी सज्जनता केवल एक दिखावटी सज्जनता थी, वह उसकी आत्मा में उतरी हुई नहीं थी।

शब्द कम हो जाते हैं

वास्तविकता यह है कि प्रभाव जितना अधिक हो, शब्द उतना ही कम हो जाते हैं। जो लोग धर्म व समुदाय के दुख में प्रतिदिन शब्दों की नदी बहाते रहते हैं, वे केवल इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि धर्म व समुदाय के दुख में वे सबसे पीछे हैं।

मिस्टर जोह्न ब्राउन उत्तरी इंगलिस्तान के एक ट्रक ड्राइवर थे। वे संतान से वंचित थे। उनकी पत्नी की शारीरिक व्यवस्था में कुछ जैविक अंतर के कारण दोनों के जीव-तत्व (शुक्राणु व डिंब) गर्भाशय में परस्पर मिलते नहीं थे। वे संतान की ओर से निराश हो चुके थे कि ऐसे कठिन समय में विज्ञान ने उनकी सहायता की। लंदन के डॉक्टर पैट्रिक स्टेप्टो, जो वर्षों से इस क्षेत्र में परीक्षण कर रहे थे, उन्होंने अपनी प्रयोगशाला में जोह्न ब्राउन का वीर्य निकाला और मिसेज ब्राउन से एक अंडा (डिंब) लिया। दोनों को उन्होंने एक विशेष टेस्ट ट्यूब में रखा। प्राकृतिक नियम के तहत दोनों निषेचित हो गए।

चार दिन बाद डॉक्टर ने उसे कृतिम रूप से गर्भाशय में धारण कराया। अब गर्भाशय में इस बच्चे का पोषण होने लगा। परीक्षण सफल रहा। अगस्त, 1978 में इतिहास का पहला टेस्ट ट्यूब बेबी अस्तित्व में आ गया। इस पूरी प्रक्रिया का चित्रण होता रहा और जन्म के बाद उसे पूरी तरह से टी०वी० पर दिखाया गया। जब टेस्ट ट्यूब बेबी लुइस ब्राउन के पिता से इस पूरी घटना पर टिप्पणी करने के लिए कहा गया तो उसने कहा, “ब्यूटीफुल।” इस एक शब्द के अलावा वह कुछ न कह सका।

दुख की घटना प्रसन्नता से अधिक बड़ी घटना होती है। इंडियन नेवी

के एक अफ़सर की पत्नी मिसेज उमा चोपड़ा को 26 अगस्त, 1978 को जब पता चला कि उनके दोनों बच्चे गीता (17) और संजय (15) की नई दिल्ली में बड़ी क्रूरता से किसी ने हत्या कर दी है तो उसके बाद उनका यह हाल हुआ कि सात घंटे तक वह एक शब्द न बोल सकीं।

वास्तविकता यह है कि प्रभाव जितना अधिक हो, शब्द उतना ही कम हो जाते हैं। जब बहुत अधिक प्रसन्नता हो तो तब भी इंसान अधिक बोल नहीं पाता और बहुत अधिक दुख हो, तब भी अधिक बोलना इंसान के लिए संभव नहीं रहता। जो लोग धर्म व समुदाय के दुख में प्रतिदिन शब्दों की नदी बहाते रहते हैं, वे केवल इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि धर्म व समुदाय के दुख में वे सबसे पीछे हैं। जो इंसान दुख-दर्द से ग्रस्त हो, उसकी तो चुप्पी लग जाती है, न कि वह शब्दों में भाषाई पहलवानी के करतब दिखाने लगे।

वास्तविकता यह है कि लोगों ने ईश्वर को न कृपालु के रूप में पाया है और न ही प्रतिशोधक के रूप में। अगर वे दोनों में से किसी रूप में भी ईश्वर को पा लेते तो यह स्थिति न रहती कि हर इंसान ऐसे शब्दों का भंडार बना हुआ है, जो किसी तरह समाप्त होने में नहीं आते।

संसार के लिए कार्य करने वाले

ईश्वर के यहाँ जो कुछ प्रतिफल है, केवल उस कर्म का है, जो केवल ईश्वर की इच्छा और नर्क से छुटकारे के लिए किया गया हो।

लोग सहृदयी हैं। वे उपहार देते हैं, दावतें करतें हैं। दूसरों के काम आने के लिए दौड़ पड़ते हैं। वे दूसरे की समस्या को अपनी समस्या समझते हैं। वे दुख के अवसर पर दुख जताने के लिए पहुँचते हैं और प्रसन्नता के अवसर

पर बधाई देने के लिए प्रस्तुत होते हैं। वे मतभेदों के पश्चात मतभेद भूल जाते हैं और शिकायत के पश्चात शिकायत को पी जाते हैं।

लोग प्रसन्न हैं कि वे बिल्कुल ठीक हैं। वे वैसे ही हैं, जैसा कि उन्हें होना चाहिए; लेकिन लोगों का यह अच्छा व्यवहार किसके साथ है? केवल उन लोगों के साथ, जिनसे उनका स्वार्थ जुड़ा है, जिनसे उन्हें उम्मीद है कि वे समय पर उनके काम आ सकते हैं, जिनसे वे डरते हैं, जिनके बल और शक्ति की धाक उनके ऊपर छाई हुई है, जिनसे कटकर वे समझते हैं कि सारे लोगों से कट जाएँगे, जिनसे जुड़कर वे समझते हैं कि सारे लोगों से जुड़े रहेंगे।

लोगों की यह उदारता पूर्ण रूप से स्वार्थ का शिष्टाचार है। इसका राज़ उस समय मालूम हो जाता है, जबकि मामला ऐसे इंसान से पड़े जिसके साथ विनम्रता बरतने के लिए कथित प्रेरकों में से कोई प्रेरक उपस्थित न हो। ऐसे अवसर पर अचानक वही इंसान बिल्कुल बुरा व्यवहार करने वाला बन जाता है, जो इससे पहले बहुत अच्छा व्यवहार करने वाला दिखाई दे रहा था।

अब उसकी इस बात में कोई रुचि नहीं होती कि वह सलाम (प्रणाम) करने में पहल करे। वह अपनी दावतों में उसे बुलाना भूल जाता है। अब वह उसके कठिन समय में काम आने के लिए नहीं दौड़ता। अब वह मामूली शिकायत पर बिगड़कर बैठ जाता है। अब उसे यह ज़रूरत महसूस नहीं होती कि वह उसकी भावनाओं का सम्मान करे। सांसारिक लाभ के लिए शिष्टाचार दिखाने वाला आदमी उस समय अशिष्टाचारी हो जाता है, जबकि इसमें कोई सांसारिक लाभ दिखाई न देता हो।

लोगों को जानना चाहिए कि इस प्रकार के शिष्टाचार का और मानवता का ईश्वर के निकट कोई मूल्य नहीं। वह किसी इंसान को नरक की आग से बचाने वाला नहीं, चाहे वह कितनी ही बड़ी मात्रा में इंसान के अंदर पाई जा रही हो।

ईश्वर के यहाँ जो कुछ प्रतिफल है, केवल उस कर्म का है, जो केवल ईश्वर की इच्छा और नर्क से छुटकारे के लिए किया गया हो और जो कर्म

संसार में अपना मामला ठीक रखने के लिए किया जाए, उसका ईश्वर के यहाँ कोई प्रतिफल नहीं। ऐसे कर्म का ढेर लेकर ईश्वर के यहाँ पहुँचने वालों से ईश्वर कह देगा, "तुमने जो कुछ किया, वह अपने संसार के लिए किया। तुम संसार में इसका प्रतिफल पा चुके हो। अब परलोक में तुम्हारे लिए इसके बदले में कुछ भी नहीं।"

पुण्य

पुण्य वास्तव में उस कर्म में है,
जो केवल ईश्वर की इच्छा के लिए किया गया हो।

जिन लोगों को ईश्वर ने पैसा दिया है, वे सामान्य रूप से ऐसा करते हैं कि अपने कर्मचारियों और अपने अंतर्गत कार्यकर्ताओं को तो केवल उचित वेतन या मज़दूरी देते हैं। दूसरी ओर कॉन्फ्रेंस या रिलीफ़ फंड या प्रसिद्ध संस्थाओं को बड़ी-बड़ी धनराशि देकर प्रसन्न होते हैं। अगर उनसे पूछा जाए कि आप ऐसा क्यों करते हैं तो वे कहेंगे कि कार्य करने वालों को जो धनराशि दी जाती है, वह तो उनके कार्य की मज़दूरी होती है। इस पर हमें पुण्य नहीं मिलेगा। उन्होंने हमारी सेवा की तो हमने उनको उसके बदले उन्हें धनराशि दी। इस पर पुण्य कैसा? यह तो दोनों ओर से मामला बराबर हो गया। इसके विपरीत संस्थाओं और जातीय कार्यों के लिए जो धनराशि दी जाती है, इनके संबंध में निश्चित है कि इन पर पुण्य मिलेगा; लेकिन इसकी तह में असल बात कुछ और है और यह उत्तर केवल असल बात पर पर्दा डालने का एक प्रयास है।

वास्तविकता यह है कि हर इंसान के दिल में यह छिपी हुई इच्छा है कि

वह जो कुछ दे, उसका प्रतिफल उसे इसी संसार में मिले। ग़रीब आदमी यह प्रतिफल पैसे के रूप में चाहता है, लेकिन जिन लोगों के पास पर्याप्त धन आ जाता है, उन्हें जिस प्रतिफल की इच्छा होती है, वह सामाजिक प्रतिष्ठा (Social Status) है। यही वह छिपी हुई इच्छा है, जो इस प्रकार के लोगों के ख़र्च करने की दिशा में बड़ी-बड़ी वर्णन योग्य मदों (वस्तुओं) की ओर कर देती है।

स्पष्ट है कि ग़रीब नौकर या कर्मचारी यह प्रतिफल देने का सामर्थ्य नहीं रखता। उसके पास न अख़बार होता है, न स्टेज। उसके पास न ऊँची बिल्डिंगों वाले संस्थान हैं और न स्वागत करने वाली परिधि, लेकिन एक आदमी जब किसी प्रसिद्ध संस्थान या किसी 'महान आलीशान' जातीय अभियान में धनराशि देता है तो उसे यह उम्मीद रहती है कि उसे इसका शानदार बदला मिलेगा— सभाओं की अध्यक्षता, सार्वजनिक अवसरों पर स्पष्ट स्थान, संस्थानों में भव्य स्वागत, सामाजिक हैसियत में वृद्धि, अख़बारों में नाम छपना और बड़े-बड़े लोगों की पंक्तियों में स्थान मिलना आदि।

पुण्य का संबंध नियत से है, न कि वर्णन योग्य मदों से। पुण्य वास्तव में उस कर्म में है, जो केवल ईश्वर की इच्छा के लिए किया गया हो। पुण्य यह है कि ईश्वर के लिए धन ऐसी मदों में दिया जाए, जो लोगों को दिखाई नहीं देतीं। उन अवसरों पर ख़र्च किया जाए, जहाँ हर प्रकार के दूसरे प्रेरक चूक जाते हैं। जिस ख़र्च का लाभ इसी संसार में वसूल कर लिया गया हो, उसका लाभ किसी को परलोक में मिलेगा तो क्यों मिलेगा। लोग दिखाई देने वाले स्थानों पर ख़र्च कर रहे हैं। हालाँकि ईश्वर उनके ख़र्च को स्वीकार करने के लिए उस स्थान पर खड़ा हुआ है, जो दिखावा करने वाले इंसानों को दिखाई नहीं देता।

ईश्वर को पाने वाले

झूठी भक्ति की धूम हर ओर दिखाई देती है, लेकिन सच्ची भक्ति इतनी दुर्लभ है कि संभावना की श्रेणी में कहा जा सकता है कि वह कहीं उपस्थित होगी।

ईश्वर की धरती पर शायद ऐसे लोग उपस्थित नहीं, जिन्होंने ईश्वर को उन महानताओं के साथ पाया हो जिसके प्रभाव व्याकुलताजनक अवस्था में ढल जाते हैं, जिसको ईश्वरीय स्मरण कहा गया है। झूठी भक्ति की धूम हर ओर दिखाई देती है, लेकिन सच्ची भक्ति इतनी दुर्लभ है कि संभावना की श्रेणी में कहा जा सकता है कि वह कहीं उपस्थित होगी।

आज सारे संसार में इस्लाम धर्म तेज़ गति से ऊँचाई पर है, लेकिन वह इंसान शायद ईश्वर की धरती पर कहीं पाया नहीं जाता, जिसने ईश्वर को इस तरह देखा हो कि उसके डर से उसका हृदय काँप उठे और उसके शरीर के रोंगटे खड़े हो जाएँ। जो क़ुरआन को पढ़े तो उसकी आत्मा पुकार उठे कि ऐ मेरे ईश्वर, यह तेरा कितना बड़ा उपकार है कि तूने मेरे मार्गदर्शन की ऐसी व्यवस्था की, वरना मैं अज्ञानता के अँधेरों में भटकता रहता। वह पैग़ंबर की सुन्नत[18] को देखे तो उसका अस्तित्व इस खोज से झूम उठे कि यह ईश्वर की कैसी असाधारण व्यवस्था थी कि उसने पैग़ंबर के जीवन में ईश्वरीय मार्गदर्शन का निष्कलंक उदाहरण स्थापित किया और फिर इतिहास में उसे प्रकाश के अनंत स्तंभ की तरह सुरक्षित कर दिया।

जब वह सज्दा करते हुए अपना सिर धरती पर रखे तो उसे यह अनुभव होने लगे कि उसके रचयिता ने उसे अपनी कृपा की गोद में ले लिया है। जब वह कोई आहार अपने गले के नीचे उतारे तो उसके पूरे अस्तित्व में कृतज्ञता

---

18 तरीक़ा, पद्धति, वह काम जो हज़रत मुहम्मद ने किया हो।

की लहर दौड़ जाए कि कैसा विचित्र है वह ईश्वर, जिसने मेरे शरीर के पालन-पोषण के लिए ऐसे पूर्ण आहार की व्यवस्था की। जब वह पानी पिए तो उसकी आँखों से एक और झरना बह पड़े और वह अधिकारहीन होकर कहे, "हे ईश्वर! अगर तू मुझे तृप्त न करे तो मैं तृप्त होने वाला नहीं, अगर तू मुझे पानी न दे तो कहीं से मुझको पानी मिलने वाला नहीं।"

आह! लोग अपने आपको ईश्वर के कितना निकट समझते हैं, लेकिन वे ईश्वर से कितना दूर हैं! वे ईश्वर का नाम लेते हैं, लेकिन उनके मुँह से ईश्वरीय मिठास की शक्कर नहीं घुलती। वे ईश्वर को पाने का दावा करते हैं, लेकिन ईश्वर के बग़ीचे की कोई सुगंध उनके मस्तिष्कों को सुगंधित नहीं करती। वे ईश्वर के नाम पर धूम मचाते हैं, लेकिन ईश्वर के उज्ज्वल सागर में नहाने का कोई चिह्न उनके शरीर पर दिखाई नहीं देता। वे समझते हैं कि ईश्वर का स्वर्ग उनके लिए विशिष्ट हो चुका है, लेकिन स्वर्ग के बाग़ का कोई झोंका उनके अस्तित्व को नहीं छूता।

कैसा अद्भुत होगा वह ईश्वर, जिसकी याद मन-मस्तिष्क के संसार में कोई रोमांच पैदा न करे! कैसा विचित्र होगा वह स्वर्ग, जिसमें प्रवेश का टिकट इंसान अपनी जेबों में लिये फिरता हो, लेकिन स्वर्ग का वासी होने की कोई झलक उसकी तेज़ बातों से व्यक्त न हो! कैसे विचित्र होंगे वह परलोक वाले, जिनके लिए परलोक की अनंत विरासत लिखी जा चुकी हो, लेकिन उनकी सारी रुचि यथावत इसी अस्थायी संसार में अटकी हुई हो।

दिखावटी ईमानदारी

यह संसार परीक्षा का संसार है। यहाँ हर इंसान की जाँच हो रही है।
यह जाँच साधारण परिस्थितियों में नहीं होती,
बल्कि असाधारण परिस्थितियों में होती है।

कभी ऐसा होता है कि पत्थर के ऊपर कुछ मिट्टी जम जाती है। इस मिट्टी के ऊपर हरियाली उग आती है। प्रत्यक्ष देखने में ऐसा लगता है कि जैसे वह कोई खेत हो, लेकिन अगर तेज़ बारिश हो जाए तो मिट्टी सहित सारी हरियाली बह जाती है और इसके बाद केवल पत्थर की साफ़ चट्टान शेष रह जाती है, जो हर तरह की हरियाली और वनस्पतियों से बिल्कुल ख़ाली होती है।

यही मामला अधिकतर इंसानों का है। वे देखने में बिल्कुल ठीक मालूम होते हैं और तौर-तरीक़े में वे बहुत 'हरे-भरे' नज़र आते हैं, लेकिन हालात का एक झटका उनके सारे हरे-भरेपन व ताज़गी को समाप्त कर देता है। इसके बाद उनका व्यक्तित्व एक सूखे पत्थर की तरह होकर रह जाता है।

एक इंसान जो बातचीत में सज्जनता व उत्तमता की तस्वीर बना हुआ था, वह व्यावहारिक अनुभव के समय अचानक एक असभ्य इंसान बन जाता है। एक इंसान जो न्याय और मानवता के विषय पर भाषण दे रहा था, वह व्यवहार के अवसर पर अन्याय की शैली अपना लेता है। एक इंसान जो मस्जिद में रुकू[19] और सज्दे में विनय का प्रदर्शन कर रहा था, वह मस्जिद के

[19] नमाज़ पढ़ने के दौरान झुकने की अवस्था।

बाहर इंसानों के साथ मामला करने में घमंड और स्वार्थ की मूर्ति बन जाता है। एक इंसान, जो दूसरों को उच्च विनम्रता और अधिकार देने का उपदेश दे रहा था, जब उसका अपना समय आता है तो वह द्वेष, ईर्ष्या और अत्याचार के रास्ते पर चलने लगता है।

यह संसार परीक्षा का संसार है। यहाँ हर इंसान की जाँच हो रही है। यह जाँच साधारण परिस्थितियों में नहीं होती, बल्कि असाधारण परिस्थितियों में होती है, लेकिन विचित्र बात यह है कि इंसान ठीक इसी समय असफल हो जाता है, जबकि उसे सबसे अधिक सफलता का प्रमाण देना चाहिए।

लोग बातों में सत्यनिष्ठा का प्रमाण दे रहे हैं। हालाँकि सत्यनिष्ठा वह है, जिसका प्रमाण व्यवहार से दिया जाए। लोग मित्रता के समय सदाचारी बने रहते हैं। हालाँकि अच्छा आचरण वह है, जो बिगाड़ के समय अच्छा आचरण सिद्ध हो। लोग ईश्वर के सामने विनय की रस्म निभाकर संतुष्ट हैं। हालाँकि किसी का विनयी होना यह है कि वह लोगों के साथ व्यवहार करते समय विनयी बना रहे।

चट्टान की मिट्टी पर की जाने वाली खेती दिखावटी खेती है। ऐसी खेती किसी किसान के कुछ काम आने वाली नहीं। सैलाब का एक रेला इसे झूठी खेती सिद्ध कर देता है। इसी तरह दिखावटी सत्यनिष्ठा भी झूठी सत्यनिष्ठा है, जिसे क़यामत का सैलाब इस तरह झूठा सिद्ध कर देगा कि वहाँ उसके लिए कुछ न होगा, जो उसका सहारा बने।

यह इंसान

> इंसान से अधिक संवेदनशील रचना ईश्वर ने कोई नहीं बनाई, लेकिन इंसान से अधिक संवेदनहीनता का प्रमाण भी कोई नहीं देता।

हज़रत मसीह के उपदेशों में से एक उपदेश में निमंत्रणकर्ता और आमंत्रित की तुलना है। यहाँ इस तुलना का अनुवाद नक़ल करते हैं— “अतएव इस ज़माने के लोगों को मैं किससे उदाहरण दूँ। वह उन लड़कों की तरह हैं, जो बाज़ारों में बैठे हुए अपने साथियों को पुकारकर कहते हैं, हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई और तुम न नाचे। हमने शोक किया और तुम नहीं रोए।” (बाइबिल, मत्ती, 11:16-17)

ईश्वर का निमंत्रणकर्ता ईश्वर के सागर में नहाता है। इस प्रकार उसके लिए संभव होता है कि वह ईश्वर के संसार में ईश्वर के गीत गाए। वह प्रकृति के सुरों पर ईश्वर के कभी न समाप्त होने वाले गीत गाए। इन गीतों में एकतरफ़ा ईश्वर की सुंदरता व चमत्कार की प्रभाएँ होती हैं, जिनकी माँग होती है कि इन्हें सुनकर इंसान नृत्य कर उठे। दूसरी ओर इन गीतों में ईश्वर की पकड़ की चेतावनियाँ होती हैं, जो एक संवेदनशील इंसान को तड़पाकर उसे रुला दें। ईश्वर का निमंत्रणकर्ता सौंदर्य और प्रताप का प्रकटन होता है, लेकिन इंसान इतना लापरवाह है कि उस पर इन चीज़ों का प्रभाव नहीं हुआ।

निमंत्रणकर्ता के कथन के रूप में ईश्वर बिल्कुल उसके निकट आ जाता है, लेकिन उस समय भी वह ईश्वर को नहीं पाता। उसमें न तो ईश्वर की प्रशंसा की अवस्थाएँ जाग्रत होती हैं और न ही ईश्वर के डर से आँखें भीगती हैं। वह कोमल संदेशों को भी पत्थर की तरह सुनता है, न कि उस इंसान की तरह जिसको ईश्वर ने वह बुद्धि दी है, जो बातों की गहराई को पा ले और वह हृदय

दिया है, जो दर्द से तड़प उठे।

ईश्वर की ओर से एक पुकारने वाले का अस्तित्व में आना किसी मशीन पर बजने वाले रिकॉर्ड का अस्तित्व में आना नहीं है। यह इंसानी आत्मा में एक ऐसी क्रांति को पैदा करना है, जिसकी प्रचंडता ज्वालामुखी पर्वतों से भी अधिक कठोर होती है।

निमंत्रणकर्ता का बोलना अपने जिगर के टुकड़े को बाहर लाना होता है। उसका लिखना अपने रक्त को स्याही बनाने के बाद अस्तित्व में आता है। उसके गीत केवल गीत नहीं होते, बल्कि इंसानी आत्मा में एक ईश्वरीय भूचाल की आवाज़ होते हैं, लेकिन इस संसार की शायद सबसे विचित्र घटना यह है कि ऐसे ईश्वरीय कथन भी इंसान को प्रभावित नहीं करते। निमंत्रणकर्ता अपने पूरे अस्तित्व के साथ उसके सामने 'स्पष्ट उदाहरण' बन जाता है, इसके पश्चात भी वह अंधा बना रहता है।

इंसान के सामने स्वर्ग की खिड़कियाँ खोली जाती हैं, फिर भी वह हर्ष के उन्माद में नहीं आता। उसको भड़कते हुए नरक का नक़्शा दिखाया जाता है, फिर भी उस पर रुदन नहीं छाता। उसके सामने ईश्वर स्वयं खड़ा हो जाता है, फिर भी वह सज्दा नहीं करता। इंसान से अधिक संवेदनशील रचना ईश्वर ने कोई नहीं बनाई, लेकिन इंसान से अधिक संवेदनहीनता का प्रमाण भी कोई नहीं देता।

ईश्वर और इंसान

ईश्वर मौन भाषा में बोल रहा है और हम इसको शोर की भाषा में सुनना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में भला कैसे संभव है कि हम ईश्वर की आवाज़ को सुन सकें? इस संसार की सबसे मूल्यवान बातें वह हैं, जो मौन भाषा में प्रसारित हो रही हैं; लेकिन जो लोग शोरगुल की भाषा सुनना जानते हों, वे इन मूल्यवान बातों से उसी तरह अनजान रहते हैं, जिस तरह एक बहरा आदमी संगीत से।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-शांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

ISBN 978-93-86589-32-3

₹40.00

CPS International
centre for peace & spirituality

Goodword

www.cpsglobal.org

www.goodwordbooks.com